ISSN 0971-1953 14 सितम्बर 2017 अंक : 21

एन.सी.एल.

आलोक

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

हिन्दी पखवाड़ा समारोह की झलकियाँ

एन.सी.एल. आलोक

वार्षिकी | 14 सितम्बर 2017 | अंक : 21

संरक्षक

प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया

निदेशक

सम्पादक

डॉ. श्रीमती स्वाति चढ्ढा

हिन्दी अधिकारी

प्रकाशक

सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला

डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे 411008

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं,
सम्पादक अथवा एनसीएल प्रयोगशाला का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. हर्ष वर्धन

Dr. Harsh Vardhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान
भारत सरकार
नई दिल्ली – 110001

MINISTER
SCIENCE & TECHNOLOGY &
EARTH SCIENCES
GOVERNMENT OF INDIA
New Delhi - 110001

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला प्रतिवर्ष ''एनसीएल–आलोक'' नामक राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन करता है। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल सीएसआईआर के कर्मचारियों अपितु अन्य लोगों में भी हिन्दी के प्रति जागरूकता आएगी। राजभाषा के प्रति सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला का प्रेम प्रशंसनीय है।

आपकी वार्षिक पत्रिका सतत एवं उत्तरोत्तर अपने प्रयास सें सफलता की ओर अग्रसर रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

(डॉ. हर्ष वर्धन)

डॉ. गिरीश साहनी
सचिव, भारत सरकार
वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग, तथा
महानिदेशक

Dr. Girish Sahni
Secretary, Govt. of India
Department of Scientific & Industrial Research, &
Director General

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
अनुसंधान भवन, 2 रफी मार्ग, नई दिल्ली – 110001

COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH
Anusandhan Bhawan, 2, Rafi Marg, New Delhi - 110001

संदेश

हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला अपनी राजभाषा पत्रिका 'एनसीएल आलोक' का इक्कीसवां अंक प्रकाशित करने जा रही है। व्यक्तिगत तौर पर मेरा ऐसा मानना है कि किसी भी प्रयोगशाला / संस्थान की राजभाषा पत्रिका उस संस्थान में हो रही वैज्ञानिक गतिविधियों का न केवल प्रतिबिंब होती है अपितु उससे प्रयोगशाला / संस्थान में राजभाषा हिंदी में चल रहे कार्यक्रमों / क्रियाकलापों आदि की भी झलक मिलती है।

मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि एनसीएल–आलोक गत लगभग दो दशकों में इस कसौटी पर खरी उतर रही है। मैं चाहूंगा कि भविष्य में भी एनसीएल आलोक इसी तरह चमकती दमकती रहे और इसमें छपने वाले लेखों को पढ़कर पाठक आपने ज्ञान में वृद्धि करते रहें।

एनसीएल–आलोक पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामनाएं तथा इसके प्रकाशन से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई।

गि॰ साहनी

(डॉ. गिरीश साहनी)

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
अनुसंधान भवन, 2 रफी मार्ग, नई दिल्ली – 110001
COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH
Anusandhan Bhawan, 2, Rafi Marg, New Delhi - 110001

के. आर. वैधीस्वरन
संयुक्त सचिव
K. R. Vaidheeswaran
Joint Secretary

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सीएसआईआर–एनसीएल पुणे, अपनी राजभाषा पत्रिका 'एनसीएल–आलोक' का इक्कीसवां अंक प्रकाशित करने जा रही है। मेरा यह मानना है कि अन्य देशों की तरह भारत में भी एक भाषा का प्रचलन संभव है। आवश्यकता इस बात है कि हिंदी भाषा के प्रयोग को आगे कैसे बढ़ाया जाए और हिंदी में शत–प्रतिशत काम कैसे किया जाए। प्रयोगशाला के युवा वैज्ञानिकों से भी मैं यह उम्मीद रखता हूं कि वे वैज्ञानिक विषयों पर लेख हिंदी भाषा के माध्यम से लिखने का प्रयास करें ताकि जहां एक ओर हिंदी में कार्य करने का अनुकूल वातावरण तैयार हो सके वहीं अन्य कार्मिकों के लिए भी उदाहरण स्थापित हो सके। मेरा ऐसा मानना है कि प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी का उपयोग धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है। ऐसे में हमारा यह दायित्व है कि हम हिंदी की श्रीवृद्धि में अपना योगदान दे। सरकारी कामकाज में भी हिंदी में शत–प्रतिशत कार्य तभी संभव हो पाएगा जब हिंदी में कार्य करते समय अन्य भाषाओं के शब्दों को ज्यों का त्यों अपनाने की छूट रहेगी। मैं यह भी मानता हूं कि कोई भी पत्र–पत्रिका अपने आप में तब तक अधूरी रहती है जब तक कि उसमें ज्वलंत एवं समसामयिक विषयों को शामिल न किया गया हो। युवा पाठकों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में पर्यावरण से जुड़े ज्वलंत व समसामयिक विषयों को शामिल किया जाना उपयुक्त एवं सराहनीय प्रयास होगा।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई तथा इसकी सफलता व उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

के आर वी

(के. आर. वैधीस्वरन)

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पुणे – 411008, भारत

CSIR-NATIONAL CHEMICAL LABORATORY
Dr. Homi Bhabha Road, Pune - 411 008, India.

प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया
निदेशक

Prof. Ashwini Kumar Nangia
Director

निदेशक की कलम से

सीएसआईआर–एनसीएल की राजभाषा पत्रिका 'एनसीएल–आलोक' के 21 वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए आनंद और हर्ष की अनुभूति है। निरंतर रूप से राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन हमारी प्रयोगशाला की राजभाषा हिन्दी के प्रति वचनबद्धता को दर्शाता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति को प्रयोगशाला में लागू करने हेतु सभी स्तरों पर प्रयास किए जा रहे है। पत्रिका का प्रकाशन हमारे इन्हीं प्रयासों का एक दर्पण है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम अपने वैज्ञानिकों के अनुसंधान कार्यों को हिन्दी में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, जिससे वैज्ञानिक कार्यों में हिन्दी भाषा को बढ़ावा मिल सके। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के उत्थान एवं विकास में अपना मौलिक योगदान देगी। मैं आव्हान करता हूं कि हमारी प्रयोगशाला के अधिक से अधिक स्टाफ / विद्यार्थी गण इस पत्रिका से जुड़े तथा अपने मौलिक योगदान से इसे और अधिक समृद्ध बनाने का प्रयास करें।

हमारी इस पत्रिका की सराहना माननीय राजभाषा संसदीय समिति के द्वारा भी की गई, जो हम सबके लिए गौरव का विषय है। मुझे अटूट विश्वास है कि हमारी गृहपत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगी और नित नई ऊंचाईयों को छूने का प्रयास करेगी। मैं इस पत्रिका की उतरोत्तर सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं और इसके प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारियों और रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूं।

अश्विनी कु. नांगिया

(प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया)

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पुणे – 411008, भारत

CSIR-NATIONAL CHEMICAL LABORATORY
Dr. Homi Bhabha Road, Pune - 411 008, India.

संपादकीय

आज सूचना प्रौद्योगिकी की विस्तृत भूमिका को देखते हुए हिंदी विश्व स्तर पर भौगोलिक सीमाओं को पार कर सूचना टेक्नोलॉजी के परिवर्तित परिदृश्य में विभिन्न जनसंचार माध्यमों तक पहुँच रही है। आज कोई भी देश विज्ञान के तथ्यों को केवल विशेषज्ञों तक ही सीमित नहीं रहने देना चाहता, बल्कि उनका प्रसार प्रबुद्ध पाठकों तथा आम लोगों के बीच करना चाहता है। भारत में भी न केवल विद्यार्थियों में, बल्कि गाँव तथा शहरों के आम लोगों में भी विज्ञान के प्रति रूचि या जागरूकता पैदा करने का सामूहिक प्रयास किया जा रहा है। यह भी प्रयास है कि विज्ञान के तथ्यों की जानकारी भारतीय भाषाओं के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाई जाए। इसके लिए हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में सहज तथा उपयुक्त वैज्ञानिक भाषा रूप का विकास जरूरी है।

साथ ही यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि बहुत से भाषा वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि हिंदी पूर्णतः वैज्ञानिक भाषा है तथा ज्ञान–विज्ञान की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण के लिए सर्वथा सक्षम है। इतिहास गवाह है कि हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन की परंपरा लगभग 200 वर्ष पुरानी है। दरअसल आज के समय में वैज्ञानिक शोधकार्य मुख्यतः अंग्रेजी भाषा के माध्यम से होने के कारण वैज्ञानिक उपलब्धियों की जानकारी समाज के मात्र मुट्ठीभर उच्च शिक्षित अंग्रेजीदां एवं शोधकर्ता वैज्ञानिक वर्ग तक ही सीमित रह जाती है, जिस कारण हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन की कमी दिखाई देती है। हमें इस विसंगति को दूर करने के लिए इन अनुसंधान कार्यों को अपनी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने एवं उसे बढ़ावा देने की आवश्यकता है। देश में वैज्ञानिक चेतना का विकास भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही हो सकता है।

इन्हीं सब उद्देश्यों को लेकर 'एनसीएल–आलोक' पत्रिका का प्रकाशन हमारी प्रयोगशाला द्वारा पिछले 20 वर्षों से लगातार किया जाता रहा है और यह अत्यंत संतोष का विषय है कि इस बार हमारी प्रयोगशाला के विभिन्न वैज्ञानिकों/विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्य ने बहुत अधिक संख्या में अपनी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजी हैं। मैं हमारे निदेशक प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया जी की आभारी हूँ, जिनके मार्गदर्शक एवं संरक्षण में इस अंक का प्रकाशन संभव हुआ, साथ ही इस अंक के सभी रचनाकारों की भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी रचनाओं से पत्रिका को अस्तित्व प्रदान किया हैं। सदा की भांति इस बार भी विभिन्न वैज्ञानिक आलेखों के साथ साहित्यिक रचनाओं का भी समावेश किया गया है। यह अंक आप सभी को पसंद आएगा, इसी आशा के साथ।

डॉ. श्रीमती स्वाति चढ्ढा
हिन्दी अधिकारी

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत		
1. सीएसआईआर की सामाजिक भूमिका	सुश्री एकता शुक्ल	4
2. एनसीएल के जैव रसायन प्रभाग में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां	श्रीमती शुचिश्वेता केंदुरकर	5
3. मनुष्य, ऊर्जा और सूर्य	डॉ. ओमकार सिंह कुशवाहा	7
राजभाषा हिन्दी जगत		
1. सीएसआईआर– एनसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन	–––	10
2. सीएसआईआर–एनसीएल में वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन	–––	12
3. हिन्दी पखवाड़ा रिपोर्ट – 2016	–––	14
4. सोशल मीडिया में हिन्दी	श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा	16
5. हिन्दी भारत की एकात्मता	श्री महेंद्र कुमार मिश्र	18
6. हमारी राजभाषा हिन्दी का महत्त्व	श्री विराट पंड्या	20
7. राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान	–––	22
साहित्य जगत		
1. त्याग	श्री राजेशकुमार श्रीवास्तव	24
2. हमारी पर्यटन यात्रा	श्री सुभाषचन्द्र मिश्रा	27
3. आज के दौर में परिवार का महत्त्व और समस्याएँ	श्री दयाल राम सैनी	29
4. महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम	श्री शंभु कुमार	30
5. आज के दौर में घटते नैतिक मूल्य–कारण एवं निवारण	श्री जयसिंह यादव	32
6. खेल के मैदान की आत्मकथा : आज की शिक्षा प्रणाली में खोता बचपन	श्री सचिन गवली	34

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
7. पक्षी गायन	डॉ. पी. एस. भटनागर	35
8. मौत से परे	डॉ. चन्दना रायबर्धन	37
9. अजब मध्यप्रदेश की गजब यात्रा	श्रीमती कल्पना तलाटी	39
10. क्यों	श्री जयसिंह यादव	42
11. सूरज	डॉ. एच. वी. आदिकाने	42
12. मेरी दो कविताएं	श्री मृत्युंजय तिवारी	43
13. जन्म मृत्यु + आसमान की डोली	सुश्री सुनीता ठोंबरे	44
14. मन मौजी हूँ कुछ भी लिख देता हूँ	श्री सुभाष चन्द्र मिश्रा	45
15. सहकर्मी	श्री मोहन ब. सूर्यवंशी	45
आपकी प्रतिक्रिया		46

हिन्दी हमारी
मातृभाषा है;
मात्र
एक भाषा
नहीं.

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत

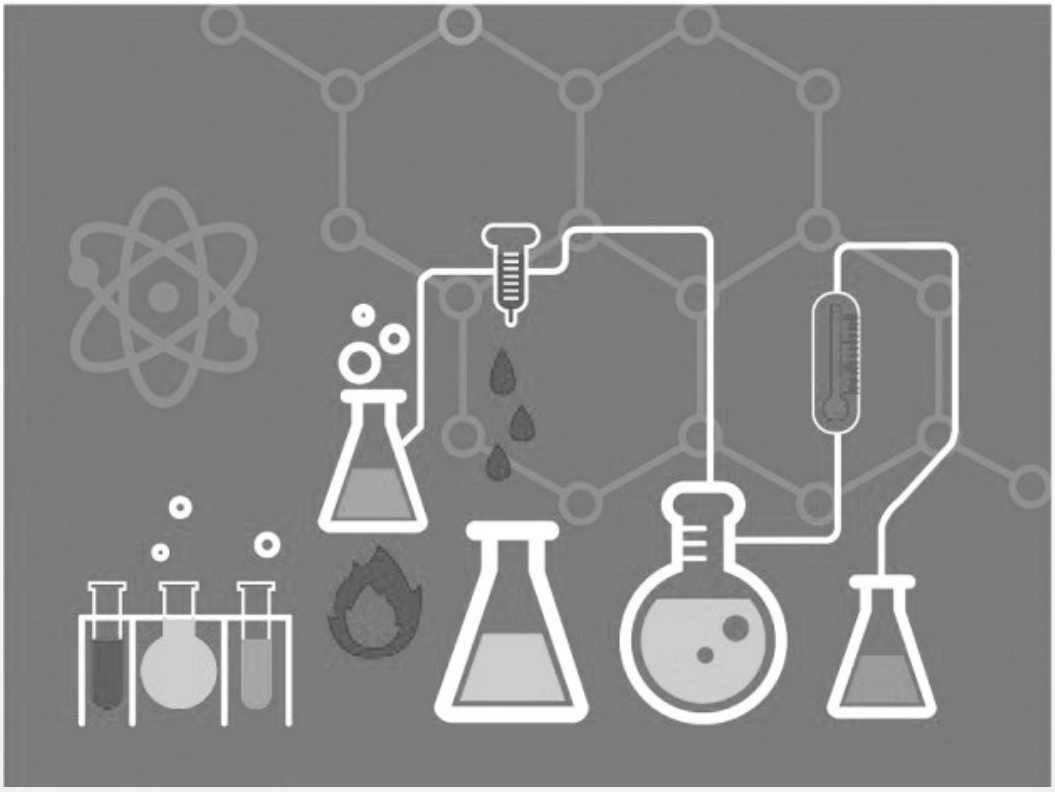

सीएसआईआर की सामाजिक भूमिका

सुश्री एकता शुक्ल, वरिष्ठ शोध छात्रा, जैव रसायन प्रभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

'विज्ञान मानवता के लिए एक सुंदर वरदान है, हमें इसे बर्बाद नहीं करना चाहिए' इसी विश्वास के साथ उपरोक्त कथन को सत्य करने में सीएसआईआर निरंतर प्रयत्नशील है। सीएसआईआर अर्थात 'वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद', विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विविध क्षेत्रों में अपने अग्रणी प्रयासों एवं योगदान के लिए यह एक प्रसिद्ध संगठन है।

भारत में अनुसंधान एवं विकास हेतु सीएसआईआर का गठन 1942 में किया गया था । वर्तमान में सीएसआईआर के पास 38 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 दूरस्थ केन्द्रों, 5 यूनिटों और नवोन्मेषी कॉम्पलेक्सों का सक्रिय नेटवर्क है।

यह सामाजिक विकास से जुड़े अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान उपलब्ध कराता है। उदाहरण के लिए–पर्यावरण, स्वास्थ्य, पेयजल, खाद्य, आवास, ऊर्जा, कृषि, जल संवर्धन एवं गैर–कृषि क्षेत्र । इनके अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी मानव संसाधन विकास में भी सीएसआईआर की भूमिका उल्लेखनीय है।

सीएसआईआर की विश्व प्रसिद्धि पर निम्न बिन्दु प्रकाश डालते है – यह विश्वभर में पेटेंट फाइल और अर्जित करने में सबसे आगे है। शिकागो इन्स्टिट्यूट रैंकिंग वर्ल्ड रिपोर्ट 2016 के अनुसार विश्वभर में सरकारी संस्थानों में सीएसआईआर का स्थान 12वां है और यह शीर्षस्थ 100 अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में अकेला भारतीय संगठन है।

पिछले 60 वर्षों में सीएसआईआर ने भारत में नवीन विज्ञान एवं उन्नत ज्ञान के क्षेत्रों में अग्रणी कार्य किए हैं। कुछ गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं – भारत में प्रथम बालपोषण आहार के उत्पादन हेतु प्रक्रिया का निर्माण किया, सुपर कंप्यूटर 'परम' का आविष्कार, एड्स की दवा का निर्माण सिपला (Cipla) कंपनी के साथ मिल कर भारत में शुरू हुआ ताकि आरोग्य के साधन उचित दामों में भारतीय नागरिकों को प्राप्त हो सके। उत्प्रेरकों के विकास से जियोलाइट (Zeolite) तकनीक का निर्यात संभव हो सका । जोजोबा, जठरोपा जैसे पौधो की सहायता से बंजर भूमि को पुन: उपजाऊ बनाने का सफल प्रयास किया गया। कृषि के क्षेत्र में भी सराहनीय प्रयास किए गए एवं कृषि उत्पादन में वृद्धि की गई। प्रदूषण नियंत्रण और जैवतकनीकी द्वारा मानव जीवन को आसान बनाने के भरसक प्रयास जारी हैं। सीएसआईआर ने उद्यमशीलता को प्रोत्साहन देने के लिए वांछित क्रियाविधि तैयार की है जिससे नए आर्थिक क्षेत्रों के विकास को नया आधार मिल सकेगा।

सीएसआईआर के निरंतर बढ़ते कदम समाज एवं देश के हित एवं विकास के लिए अहम भूमिका निभा रहे है। राष्ट्र के बढ़ते सपनों और अपेक्षाओं के चलते सीएसआईआर संस्थानों से विकास की उम्मीदे निरंतर बढ़ रही हैं। न सिर्फ वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास गति अपितु उच्च जीवन स्तर की उम्मीदें सम्मुख हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना अनिवार्य होगा – मुक्त नवोन्मेष और सर्वोच्च स्त्रोत, पराविषयी क्षेत्रों में प्रतिभा का पोषण करना, विज्ञान पर आधारित उद्यमशीलता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अंतराक्षेपण के माध्यम से सामाजिक आर्थिक परिवर्तन एवं उत्थान। इस दिशा में CSIR-800 नामक अति महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है ताकि 80 कोटि ग्रामीणों का विकास हो सके।

अत: 'सीएसआईआर@800: दूरदृष्टि एवं रणनीति 2022–नए भारत के लिए नया सीएसआईआर' तैयार किया गया है। जिसके अंतर्गत सीएसआईआर का मिशन है – ''नए भारत के लिए नए सीएसआईआर का निर्माण करना''।

माननीय प्रधानमंत्री के शब्दों में – ''वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद 75 वर्ष पुरानी है और डॉ. भटनागर द्वारा उस समय इसका गठन उस समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए किया गया था । मैं ऐसे नए सीएसआईआर का निर्माण चाहता हूँ जो आधुनिक भारत की अपेक्षाओं को पूरा करें''

''नए भारत की नई सोच''

मुझे सीएसआईआर का एक छोटा ही सही, अनभिज्ञ हिस्सा होने पर गर्व है।

कष्ट ही तो वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य को कसौटी पर परखती है और आगे बढ़ाती है।– वीर सावरकर

एनसीएल के जैव रसायन प्रभाग में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां

श्रीमती शुचिश्वेता केंदुरकर, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, जैव रसायन प्रभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

जैव रसायन प्रभाग, एनसीएल का एक अविभाज्य अंग है जहां जैव रसायन के मूलभूत सिद्धांतों का अनुप्रयोग विभिन्न पहलुओं में किया जाता है। हमारे प्रभाग के प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र माइक्रोबीयल टेक्नॉलॉजी, स्ट्रक्चरल बॉयोलॉजी, मान विकार/रोग, पादप जैव रसायन, आण्विक जीव विज्ञान और पादप ऊतक संवर्धन है।

हमारे प्रभाग का प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र माइक्रोबीयल टेक्नॉलॉजी मे एंजाइमोलॉजी है। यहां औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण एंजाइम्स के अनुप्रयोग पर मुख्यत: कार्य किया जाता है, जिनमें से कुछ penicillin acylases, cellulases एवं xylanases हैं। भोजन एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी एंजाइम्स की खोज भी की जा रही है। सीरम कोलेस्ट्रॉल कम करने हेतु प्रोबॉयोटिक निर्मिति की परियोजना स्टार्टअप को BIRAC अनुदान प्राप्त हुआ है, जिसे 'अभिरूची प्रोबॉयोटिक्स प्रा.लि.' के नाम से बड़े पैमाने पर बिक्री हेतु तैयार किया जा रहा है। मानव एवं पादप रोगजनकों के नियंत्रण हेतु एंजाइम आधारित निर्माण की विस्तृत श्रेणियां हमारी मुख्य उपलब्धियां है । Mycoinsecticides का फील्ड परीक्षण किया गया है एवं यह उत्पादन व्यवसायीकरण के लिए भी तैयार है। सूक्ष्मजीवों के द्वारा बॉयोमास का मूल्य वर्धित रसायनों में रूपांतरण हमारे प्रभाग की एक बड़ी सफलता है।

Sophorolipids बहुमुखी यौगिक है जिनका उपयोग कृषि में बीजों की कोटिंग करने, पोषक तत्वों की वृद्धि करने तथा सब्जियों को धोने (EcoWash™) में किया जाता है, जिसके कारण सब्जियों एवं फलों की उपयोग करने की अवधि (Shelf life) तेजी से बढ़ जाती है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में इसका प्रयोग घावों के भरने में, theranostics में, दवाओं की विलेयता में होता है तथा इसमें एंटी–कैंसर गुण पाये जाते हैं। दवाओं के क्षेत्र में sophorolipids रोगकारकों का पता लगाने में, एंटीबायोटिक्स के आसान प्रवेश हेतु तथा quorum quenching में सहायता करता है। इस परियोजना को 'ग्रीन पिरामिड प्रा.लि.' कंपनी निर्मित करके बड़े पैमाने पर इस गतिविधि को बढ़ाने के लिए BIRAC अनुदान प्राप्त हुआ है। साथ ही गोदरेज, टाटा केमिकल्स जैसी प्रमुख कंपनियों एवं स्थानीय कृषि कंपनियों के साथ टाई अप करने के प्रयास भी जारी है।

नैनोटेक्नॉलॉजी क्षेत्र में फंगल एंडोफायट्स से नैनो पार्टिकल्स का संश्लेषण कार्य विस्तारपूर्वक किया जा रहा है।

स्ट्रक्चरल बॉयोलॉजी के अंतर्गत एक्सरे क्रिस्टलोग्राफी एवं इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी का उपयोग करते हुए कोशिका परिवर्तन में सम्मिलित महत्वपूर्ण यौगिकों का शुद्धिकरण, पृथक्करण एवं पहचान की जा रही है। इसमें एक महत्वपूर्ण सफलता स्टैम सैल में एंडोसोमल प्रोटीन के रूप में अभिव्यक्त Asrij की अभिव्यक्ति, शुद्धिकरण एवं क्रिस्टलाईजेशन के रूप में मिली है एवं विभिन्न एंजाइमों तथा आइसोप्रीनोइड्स की संरचना पर भी कार्य जारी है। साथ ही अल्जाइमर रोग में Tau की महत्वपूर्ण भूमिका पर अध्ययन किया जा रहा है।

हमारे प्रभाग में किए जा रहे अनुसंधान कार्यों का अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र आण्विक परजीवी विज्ञान (Molecular Parasitology) एवं परजीवी संक्रामक रोगों के लिए दवाईयों की खोज (Drug Discovery for Prasitic Infectious Diseases) है, जहां एंटी मलेरियल, एंटी पैरासिटिक एवं एंटी टोक्सोप्लाज्मा कंपाउंड की पहचान के लिए स्क्रीनिंग जारी है।

डाइबिटीज में हाइपरग्लायसीमिया के कारण Advanced Glycated End Products (AGE) का निर्माण होता है, जो डाइबिटीज होने का एक प्रमुख संकेत है। इस संदर्भ में चेलाराम डाइबिटीज अनुसंधान संस्थान के सहयोग से diagnostic fragmention library for glycated peptides of human serum albumin विकसित किया गया है। चूंकि AGEs का संग्रह डाइबिटीक जटिलताओं से जुड़ा हुआ है अत: hydralazine जैसे अणु उनके संचय को कम कर सकते हैं।

पादप जैव रसायन/आण्विक जीव विज्ञान में कीट नियंत्रण के विकास हेतु अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। पौधों की रोग प्रतिरोधक, तेल की गुणवत्ता एवं stress tolerance सुधारने हेतु

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है परंतु एक नया वातावरण देना भी है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

Metabolic pathway analysis एवं engineering की जा रही है। अल्फांसो आम के विशिष्ट स्वाद के लिए जिम्मेदार यौगिक की खोज करने के लिए इसका Volatile profiling किया गया है। विभिन्न पादप जातियों के लिए जीन विविधता अध्ययन एवं डीएनए बारकोडिंग सिस्टम के विकास से संबंधित कार्य भी जारी है।

पादप ऊतक संवर्धन में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों, विविध फसलों, बागवानी प्रजातियों, औषधीय एवं सजावटी पौधों के सूक्ष्म प्रजनन से संबंधित प्रौद्योगिकियां विकसित की गई है। लुप्तप्राय औषधीय पौधों के संरक्षण का कार्य भी किया जा रहा है। पौधों में औषधीय रूप से सक्रिय यौगिकों की invitro द्वारा वृद्धि की विशेष नीतियां अपनाई जा रही हैं। केसर में invitro पुष्पीकरण का कार्य एक महत्वपूर्ण सफलता हैं, इसी तरह कम लागत वाले ग्रीनहाऊस की संरचना एवं इसमें पुणे की जलवायु में केसर में पुष्पीकरण होना किसानों को लाभ पहुंचाने की दृष्टि से हमारे विभाग की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

❑❑❑

माँ का विश्वास

थॉमस अल्वा एडिसन प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। एक दिन स्कूल में टीचर ने एडिसन को एक मुड़ा हुआ कागज दिया और कहा कि यह ले जाकर अपनी माँ को दे देना। एडिसन घर आए और अपनी माँ को वह कागज देते हुए कहा, 'टीचर ने यह आपको देने को कहा है।' माँ ने वह कागज़ हाथ में लिया और पढ़ने लगी। पढ़ते पढ़ते उनकी आँखों से आंसू बहने लगे। एडिसन ने माँ से पूछा, 'इसमें क्या लिखा है माँ? यह पढ़कर तुम रो क्यों रही हो? आंसू पोंछते हुए माँ ने कहा, 'इसमें लिखा है कि आपका बेटा बहुत होशियार है और हमारा स्कूल नीचे स्तर का है। यहां अध्यापक भी बहुत शिक्षित नहीं हैं, इसलिए हम इसे नहीं पढ़ा सकते । इसे अब आप स्वयं शिक्षा दें।' उस दिन के बाद से माँ खुद उन्हें पढ़ाने लगीं और माँ के ही मार्गदर्शन में एडिसन पढ़ते रहे, सीखते रहे। कई वर्षों बाद माँ गुजर गई । मगर तब तक एडिसन प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन चुके थे और उन्होंने फोनोग्राफ और इलेक्ट्रिक बल्ब जैसे कई महान अविष्कार कर लिए थे। एक दिन फुरसत के क्षणों में वह अपनी पुरानी यादगार वस्तुओं को देख रहे थे तभी उन्होंने आलमारी के एक कोने में एक पुराना खत देखा और उत्सुकतावश उसे खोलकर पढ़ने लगे । यह वही खत था जो बचपन में एडिसन के शिक्षक ने उन्हें दिया था। उन्हें याद था कि कैसे स्कूल में ही उन्हें अत्यधिक होशियार घोषित कर दिया गया था। मगर पत्र पढ़कर एडिसन अचंभे में पड़ गए। उस पत्र में लिखा था, 'आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर काफी कमजोर है। इसलिए उसे अब स्कूल न भेजे।' अचानक एडिसन की आँखों से आंसू झरने लगे। वह घंटों रोते रहे और फिर अपनी डायरी में लिखा, 'एक महान माँ ने बौद्धिक तौर पर काफी कमजोर बच्चे को सदी का महान वैज्ञानिक बना दिया।'

मनुष्य, ऊर्जा और सूर्य

डॉ. ओमकार सिंह कुशवाहा, वरिष्ठ शोध छात्र, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

''पृथ्वी की समस्त ऊर्जा आवश्यकताओं का समाधान सुबह पूर्व में उदय होकर संध्याकाल पश्चिम में अस्त हो जाता है।''

पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन तथा ऊर्जा संकट जैसी विकराल एवं जटिल समस्याओं का समाधान वर्तमान तथा भविष्य को ध्यान में रखते हुए ऊर्जा संसाधनों में बहुत बड़े बदलाव के

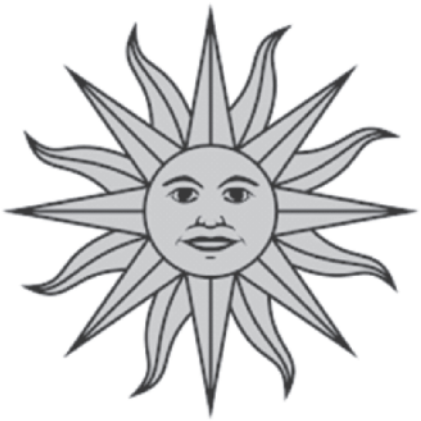

लिए बाध्य कर रहे हैं। पिछले दशक में हुए अध्ययन तथा अनुसंधानों से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि पूरे जगत का अस्तित्व बचाना है तो हमें बहुत बड़े स्तर पर प्राकृतिक अक्षय ऊर्जा स्त्रोत पर आधारित योजनाओं को शीघ्रता से कार्यान्वित करना होगा । सूर्य, जल एवं पवन का प्रकाश धरती पर उपलब्ध सर्वविदित अक्षय ऊर्जा के स्त्रोत एवं जीवन का आधार है।

वर्ष 2001 में जैकबसन तथा मास्टर्स द्वारा साइंस जर्नल में प्रकाशित शोध पत्र के अनुसार सौर ऊर्जा भंडार पृथ्वी पर मौजूद अन्य सभी प्रकार के ऊर्जा भंडारों को बौना साबित करता है। इस शोध पत्र के एक आकलन में यह भी दर्शाया गया है कि पृथ्वी पर उपस्थित सभी महाद्वीपों के स्थलीय भूभाग पर एक वर्ष में पहुँचने वाली कुल सौर ऊर्जा पृथ्वी पर मौजूद कुल कोयले के भंडार से तीस गुना अधिक तथा एक वर्ष में मानव द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली समस्त ऊर्जा आवश्यकताओं से पन्द्रह सौ गुना अधिक है।

पहले सूर्य से जीवन और अब सूर्य से जीवन विकास, शायद यही कारण है कि सूर्य की शक्ति का सही–सही एहसास तथा उपयोगिता हमारे वैज्ञानिक तथा शैक्षणिक जगत में लोगों को रुचिकर लग रही है तथा इस दिशा में नित्य नए अनुसंधान, शोध पत्र तथा पेटेंट के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। आज मानव ऊर्जा–सूर्य कौतुहल का विषय बन गए हैं।

अब यदि विषय ऊर्जा तथा पर्यावरण से संबंधित हो तो कौन–सा देश नहीं चाहेगा कि इसका औद्योगिक उत्पादन करके अधिक से अधिक लाभ लिए जाए। इसी क्रम में फोटो–वोल्टिक उद्योग की वार्षिक विकास दर 40% से अधिक रही है। यदि एशिया महाद्वीप की बात की जाए तो चीन तथा ताइवान ने मिलकर विश्व के 65% फोटो–वोल्टिक उत्पादन उद्योग पर अधिकार प्राप्त कर लिया है। वहीं दूसरी ओर सोलर फोटो वोल्टिक मशीनरी का उपयोग करके ऊर्जा उत्पादन में यूरोपियन समूह देशों ने दो–तिहाई भाग पर आधिपत्य कर रखा है।

आज कई प्रकार के सोलर–सैल विकसित किए जा चुके है परंतु सिलिकन–वेफर आधारित सोलर–सैल तकनीक ही सर्वाधिक सुलभ एवं प्रचलित है तथा बाज़ार के कुल 85% भाग पर प्रभुत्व बना रखा है परंतु आज आवश्यकता कम लागत में अधिक उत्पादन क्षमता वाले सोलर प्रणाली विकसित करने की है। इस बात पर प्रमुखता देनी है कि सोलर सैल ऊर्जा उत्पादन कोयला

जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं।– अमृतलाल नागर

आधारित ऊर्जा उत्पादन से कम या बराबर आ जाए। इसी उद्देश्य के साथ दुनिया के सभी शीर्ष वैज्ञानिक दल दिन–रात एक किए हुए हैं।

सोलर पदार्थ एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में नित नए सिद्धांतों, अनुभवों एवं क्षमता वर्धन के कारण विभिन्न तकनीकें सामने आ रही हैं। आधुनिक विज्ञान की यह शाखा जितनी तेज गति से विकास कर रही है, उतनी ही अधिक चुनौतियाँ भी पेश कर रही है। इसी दिशा में एक नई तकनीक जिसे ''पॉलीमर–सोलर फोटो–वोल्टिक्स'' या ''कार्बनिक–सोलर–फोटो–वोल्टिक्स'' के नाम से जानते है, अपार संभावनाएं लेकर आ रही है। इस तकनीक से विकसित सोलर–सैल वजन में हल्की, लचीली, मनचाहे रंगों तथा आकार में बनाई जा सकती है। पतली फिल्में एवं कोटिंग के रूप में उपयोगी होने के कारण यह तकनीक क्रांतिकारी रूप से विकास कर रही है तथा इसका भविष्य भी अत्यंत उज्ज्वल है । भारत सरकार ने भी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अपनी आकांक्षा प्रकट करते हुए वर्ष 2019 तक एक लाख मेगावाट सोलर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य रखा है। इस परियोजना के क्रियान्वित होने के उपरांत भारत विश्व में सौर–ऊर्जा उत्पादन में शीर्ष पर होगा ।

अत: हम निकट भविष्य में प्रदूषण मुक्त, आधुनिक तथा सौर–ऊर्जा चलित संसार की कल्पना कर सकते हैं।

भविष्य को ध्यान में रखते हुए, बहुलक आधारित सौर–ऊर्जा संयंत्र कम लागत, हल्के एवं लचीले तथा प्रिंटिंग पद्धति से प्रसंस्करित होने के कारण अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग में लाए जा सकते हैं। इसी कारण वैज्ञानिक पॉलिमर सोलर सैल की क्षमता, स्थिरता तथा प्रसंस्करण में तेजी से नई तकनीक विकसित करने में प्रयासरत हैं।

एक अन्य योजना के अंतर्गत भारत सरकार ने वर्ष 2030 तक 300 गिगावाट उत्पादन क्षमता वाले सौर ऊर्जा पर स्थापित करने की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को हरी झंडी दे दी है। विश्व की कुल आबादी का 1/6 भाग भारत में निवास करता है और इतने बड़े जन–समूह की सभी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमें जिस अक्षय ऊर्जा स्त्रोत की जरूरत थी वह सूर्य ही है। तेजी से विकसित होती देश की अर्थव्यवस्था की सभी ऊर्जा आवश्यकताओं की सभी जरूरतों का हल, भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुसार सौर–ऊर्जा का अधिक से अधिक दोहन करने से हो सकता है। यहां की जलवायु इसके बिल्कुल अनुकूल है। अब जरा कल्पना करते हैं कि सौर–ऊर्जा उत्पादन यदि न हो रहा हो, तो हम इतने अधिक प्रदूषण तथा पर्यावरण संकट को उत्पन्न कर लेंगे कि भविष्य ही खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए अन्य देश किसी प्रकार की पहल करें न करें, भारत सरकार को आगामी 20-25 वर्षो की कार्य योजना बनाकर यह सुनिश्चित करना होगा कि इतने विशाल देश में हर व्यक्ति सौर–ऊर्जा से चलने वाले यंत्रों जैसे कि सोलर हीटर, सोलर कुकर, सोलर प्रेस, सोलर वाहन, सोलर लाइट आदि का ही प्रयोग करें। यहां यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि सूर्य प्रकाश हर जगह मुफ्त में उपलब्ध है तथा न तो इसके भंडारण की कोई चिंता करनी है और न ही एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरण में होने वाले समय तथा धन के खर्च की। आनेवाले समय में नैनो–तकनीक का सौर–ऊर्जा उत्पादन में उपयोग करके ऐच्छिक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं ।

❑❑❑

केवल कर्महीन ही ऐसे होते हैं, जो सदा भाग्य को कोसते हैं और जिसके पास शिकायतों का अंबार होता है।– श्री जवाहरलाल नेहरू

राजभाषा हिन्दी जगत

सीएसआईआर-एनसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन

भारत सरकार की राजभाषा नीति तथा राजभाषा संबंधी नियमों का अनुसरण करने की दृष्टि से सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन.सी.एल.) में प्रत्येक स्तर पर गहन प्रयास किए जाते है। सीएसआईआर-एन.सी.एल. एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहां अधिकांश कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्वरूप का होता है तथा शेष प्रशासनिक कार्य अधिकांशतः हिन्दी भाषा में किया जाता है। इस प्रयोगशाला में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी उल्लेखनीय प्रयास निम्नानुसार हैं।

1. प्रत्येक तिमाही में प्रयोगशाला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक नियमित रूप से निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की जाती है एवं इन बैठकों में प्रयोगशाला में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रयासों की समीक्षा की जाती है। इन बैठकों में प्रयोगशाला के प्रत्येक प्रभाग/अनुभाग प्रमुख सदस्य के रूप में उपस्थित रहते हैं।

2. प्रयोगशाला के स्टाफ को हिन्दी कार्य करने में आ रही समस्याओं का निदान करने तथा हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दृष्टि से प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इन कार्यशालाओं में स्टाफ को भारत सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी देने के साथ-साथ अपना दैनंदिन सरकारी कार्य हिन्दी में करने तथा कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से हिन्दी में काम करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

3. प्रयोगशाला में प्रतिवर्ष हिन्दी गृहपत्रिका 'एनसीएल-आलोक' का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाता है। गृहपत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा में लिखे गए वैज्ञानिक लेखों का प्रचार-प्रसार तथा कर्मचारियों की हिन्दी में लेखन और अभिव्यक्ति क्षमता को प्रोत्साहित करना है।

4. प्रयोगशाला में प्रतिवर्ष हिन्दी पखवाड़ा समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर स्टाफ के लिए विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिन्दी पखवाड़ा के आरंभ में हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष प्रयोगशाला की वार्षिक गृहपत्रिका ''एनसीएल-आलोक'' का विमोचन किया जाता है।

5. प्रयोगशाला के हिन्दी कक्ष द्वारा प्रतिदिन हिन्दी सुविचार तथा अंग्रेजी शब्द के अर्थ का प्रेषण मेल द्वारा सभी कर्मचारियों को किया जाता है, ताकि कर्मचारियों में हिन्दी भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकें।

6. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी दस्तावेज द्विभाषी जारी किए जाते हैं।

7. इस प्रयोगशाला में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

8. केंद्र सरकार, राजभाषा नियम 1976 (संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग) के नियम 10(4) के अंतर्गत इस प्रयोगशाला को ऐसे कार्यालयों के रूप में, जिसके 80% से अधिक कर्मचारी वृंद ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, राजपत्र में अधिसूचित किया गया है।

9. प्रयोगशाला के 98% कर्मचारियों को हिन्दी, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

10. प्रशासन अनुभाग के कुछ अधिकारियों/कर्मचारियों तथा वैज्ञानिक स्टाफ को कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित किया गया है तथा शेष स्टाफ को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया जारी है।

11. प्रयोगशाला में सभी मानक प्रपत्र, फार्म तथा आवेदन पत्र इत्यादि द्विभाषी रूप में तैयार किए गए हैं।

12. प्रयोगशाला की वैबसाइट को द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किया गया है।

13. प्रयोगशाला के सभी कम्प्यूटरों में द्विभाषी रूप से कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है।

14. प्रयोगशाला के सभी साइनबोर्ड, नाम-पट्टों तथा रबर की मोहरों को द्विभाषी बनाया गया है।

15. प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मिली-जुली भाषा का उपयोग किया जाता है।

असफलता का मौसम, सफलता के बीज बोने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है।

16. एनसीएल के अधिकारियों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता है।

17. प्रयोगशाला की शीर्ष स्तर की प्रबंध परिषद की बैठकों की कार्यसूची द्विभाषी रूप में तैयार की जाती है और इन बैठकों में हिन्दी में भी चर्चा की जाती है।

18. प्रयोगशाला के पुस्तकालय हेतु प्रतिवर्ष हिन्दी पुस्तकें खरीदी जाती है।

19. प्रयोगशाला में आयोजित होने वाले समारोहों, व्याख्यानों एवं संगोष्ठियों की रिपोर्ट हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सीएसआईआर समाचार में प्रकाशनार्थ राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत संस्थान (निसकेसर), नई दिल्ली को नियमित रूप से भेजी जाती है।

20. सीएसआईआर मुख्यालय की मौलिक (विज्ञान) पुस्तक लेखन योजना, वैज्ञानिक कार्यों में हिन्दी पुरस्कार योजना तथा विज्ञान चिंतन लेखमाला आदि योजनाएँ इस प्रयोगशाला में लागू हैं। इन सभी योजनाओं में प्रयोगशाला के वैज्ञानिक और कर्मचारी उत्साहपूर्वक भाग लेते है।

21. इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला में आयोजित होने वाले विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रमों तथा अन्य समारोहों का संचालन भी हिन्दी माध्यम से किया जाता है।

22. इस प्रयोगशाला के वैज्ञानिक देश के विभिन्न संस्थानों में राजभाषा के माध्यम से आयोजित होने वाली संगोष्ठियों तथा विज्ञान सम्मेलनों में भाग लेकर हिन्दी भाषा में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते है।

23. प्रयोगशाला से जारी होने वाली सभी निविदा सूचनाएँ तथा विज्ञापन इत्यादि द्विभाषी रूप में प्रकाशित किए जाते हैं।

24. प्रयोगशाला के स्टाफ को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दृष्टि से यहाँ विभिन्न राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएँ लागू हैं।

25. प्रयोगशाला में हिन्दी कामकाज को बढ़ावा देने तथा राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु 9 अनुभागों को हिन्दी में पूर्णतः कार्य करने के लिए निर्दिष्ट किया गया है।

26. प्रयोगशाला में प्राप्त हिन्दी पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिये जाते हैं तथा 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों को जाने वाले अधिकांश पत्रों के लिफाफों पर पते हिन्दी भाषा में लिखे जाते हैं।

27. राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम तथा राजभाषा संबंधी निर्देशों से सभी विभाग/प्रभाग प्रमुखों को अवगत कराया जाता है।

28. प्रवेश द्वार पर एनसीएल के उद्देश्य वाक्य को हिन्दी में दर्शाया गया है।

❑ ❑ ❑

सीएसआईआर–एनसीएल में वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुसरण करते हुए सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे द्वारा दिनांक 19 जनवरी 2017 को 'सीएसआईआर–एनसीएल : समग्र अनुसंधान' नामक विषय पर एकदिवसीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री डॉ. ज्ञानचंद्र मिश्र (पूर्व निदेशक, एनसीसीएस, पुणे) उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में हिन्दी अधिकारी डॉ. श्रीमती स्वाति चड्ढा ने सभी व्याख्याताओं, उपस्थित प्रतिभागियों एवं वैज्ञानिक वर्ग का स्वागत करते हुए कहा कि 'राजभाषा के माध्यम से इस प्रकार की संगोष्ठियों का आयोजन राजभाषा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान दोनों क्षेत्रों के लिए आवश्यक है'। इस अवसर पर उन्होंने प्रयोगशाला में किए जा रहे राजभाषा उन्नयन संबंधी प्रयासों तथा गतिविधियों की भी जानकारी दी। संगोष्ठी के संयोजक तथा प्रकाशन तथा विज्ञान संचार इकाई के प्रमुख डॉ. प्रभाकर इंगळे ने सभी उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की प्रस्तावना देते हुए कहा कि ''आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के बढ़ते कदम देखकर सभी को प्रसन्नता होना स्वाभाविक है, किन्तु हमारे ही देश में बहुत से क्षेत्रों में हमारी इस भाषा को वह सम्मान प्राप्त नहीं है, जिसकी वह अधिकारिणी है। अतः हमारा उत्तरदायित्व है कि अन्य सभी क्षेत्रों के साथ–साथ विशेष रूप से वैज्ञानिक साहित्य की सम्पदा अपनी राजभाषा में बढ़ाएं। अच्छे और आदर्श अनुवाद उपलब्ध हों, मौलिक वैज्ञानिक साहित्य को प्रचुर मात्रा में लिखा जाये और इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए वैज्ञानिक संगोष्ठियां हिन्दी माध्यम से की जाएं एवं हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण भी हो।'' उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में एनसीएल के जैवरसायन प्रभाग की प्रमुख डॉ. श्रीमती अर्चना पुंडले उपस्थित थी। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि ''हम सब जानते हैं कि हिन्दी राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है किन्तु तकनीक और विज्ञान से संबंधित क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग अत्यंत कम होता है। आज राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होने के लिए हिन्दी भाषा में पर्याप्त विज्ञान संबंधी साहित्य अपेक्षित है। साथ ही अधिकांश वैज्ञानिक शोधकार्य अंग्रेजी भाषा में ही होने के कारण जन साधारण तक उसकी जानकारी नहीं पहुंच पाती है। अतः राजभाषा हिन्दी के माध्यम से इस संगोष्ठी का आयोजन करके हम वैज्ञानिक कार्यों को हिन्दी भाषा में करने का संदेश भी दे रहे हैं।''

उद्घाटन सत्र के पश्चात संगोष्ठी तीन सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम सत्र में डॉ. आशीष के. भट्टाचार्य (वरिष्ठ वैज्ञानिक, कार्बनिक रसायन प्रभाग) ने 'प्राकृतिक एंटीमलेरियल एजेंट आर्सीमिसिनिन' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् डॉ. विनय भंडारी (वैज्ञानिक एवं प्रोफेसर–सीएसआईआर, रासा. अभि. विभाग) ने 'जल प्रदूषण की समस्या–औद्योगिक प्रदूषित जल शुद्धिकरण में सीएसआईआर–एनसीएल का योगदान' विषय पर अपनी प्रस्तुती दी। तत्पश्चात् डॉ. राजेंद्र कुमार (वैज्ञानिक, रासा.अभि. विभाग) ने अपने शोधपत्र के द्वारा 'प्रक्रिया विकास और अनुकूलन के लिए रिएक्शन कैलोरीमीटर का उपयोग' संबंधी जानकारी प्रदान की। इस सत्र की अध्यक्षता बहुलक विज्ञान एवं अभि. प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुरेश भट ने की।

द्वितीय सत्र में डॉ. सुरेश भट (वरिष्ठ वैज्ञानिक, बहुलक विज्ञान एवं अभि. प्रभाग) ने ''सॉफ्ट मटेरियल्स–द्रव और ठोस के बीच का विश्व'' तथा डॉ. हर्षवर्धन पोळ (वरिष्ठ वैज्ञानिक, बहुलक विज्ञान एवं अभि.) ने 'PEM फ्यूल सैल – भारत में इसकी संभावनाएं एवं इस दिशा में सीएसआईआर के प्रयास' नामक विषय पर प्रस्तुतियां दी। इसके पश्चात् श्रीमती शुचिश्वेता केंदुरकर (वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, जैव रसायन प्रभाग) ने 'जैव रसायन प्रभाग में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां' तथा डॉ. महेश धरने (प्रमुख–एनसीएआईएम) ने ''औद्योगिक सूक्ष्मजीवों का राष्ट्रीय संग्रह : एक राष्ट्रीय स्तर पर सुविधा प्रदान करने वाला केंद्र'' विषय पर अपनी प्रस्तुती दी। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. आशीष के. भट्टाचार्य (वरिष्ठ वैज्ञानिक, कार्बनिक रसायन प्रभाग) द्वारा की गई।

सत्याग्रह की लड़ाई हमेशा दो प्रकार की होती है। एक जुल्मों के खिलाफ और दूसरी स्वयं की दुर्बलता के विरूद्ध।– सरदार पटेल

तृतीय सत्र में. डॉ. सचिन अगवने (वैज्ञानिक, जैव रसायन प्रभाग) ने ''जैव चिकित्सा अनुसंधान में प्रयोगात्मक प्राणियों का उपयोग एवं दवाओं की खोज में इनका महत्त्व'' तथा डॉ. सुरेश गोखले (प्रधान वैज्ञानिक, कार्बन नैनोटेक्नोलॉजी) ने 'भौतिकी एवं पदार्थ रसायन प्रभाग की प्रयोगात्मक अनुसंधान विशिष्टताएं' तथा डॉ. दूर्बा सेनगुप्ता (वरिष्ठ वैज्ञानिक, भौतिकी एवं पदार्थ रसा. प्रभाग) ने 'भौतिकी एवं पदार्थ रसायन प्रभाग की प्रयोगात्मक एवं अनुसंधान विशिष्टताएं' विषय पर अपनी प्रस्तुतियां दी। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेंद्र कुमार, वैज्ञानिक, रासा. अभियांत्रिकी एवं प्रक्रिया विकास प्रभाग, एनसीएल ने की।

सभी सत्र अध्यक्षों द्वारा प्रत्येक प्रस्तुति के पश्चात् उसकी विवेचनापूर्ण समीक्षा करते हुए उस विषय पर अपने मौलिक विचार भी प्रस्तुत किए गए तथा उपस्थित शोधछात्रों तथा वैज्ञानिकों को भी चर्चा में सम्मिलित किया गया।

संगोष्ठी के समापन सत्र में अध्यक्ष डॉ. अर्चना पुंडले (प्रमुख, जैव रसायन प्रभाग) ने आयोजकों को संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु बधाई दी तथा प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि 'इस प्रकार के आयोजनों द्वारा ही हम हिन्दी भाषा के माध्यम से विभिन्न प्रकार के अनुसंधान कार्यों को जनमानस तक पहुंचा सकते हैं'। इस अवसर पर उनके द्वारा समस्त शोधपत्र प्रस्तुतकर्ताओं तथा सत्र अध्यक्षों को स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी के संयोजक डॉ. प्रभाकर इंगळे ने कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. अर्चना पुंडले को स्मृतिचिन्ह देकर उनका सत्कार किया। अंत में श्री. आर. आर. लोखंडे, जनसंपर्क एवं कार्यक्रम प्रबंधन विभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। संगोष्ठी का संचालन तथा समन्वयन हिन्दी अधिकारी डॉ. श्रीमती स्वाति चड्ढा द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी की संपूर्ण कार्यवाही हिन्दी भाषा में संपादित की गई।

❑❑❑

हाथों की शोभा

एक बार महान कवि माघ अपने घर में बैठे एक रचना लिखने में तल्लीन थे । एक गरीब ब्राह्मण उनके पास आया और बोला, 'आपसे एक आशा लेकर आया हूँ। मेरी एक कन्या है। वह युवा हो गई है। उसके विवाह की व्यवस्था करनी है, किंतु मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपकी उदारमन प्रकृति की चर्चाएं दूर-दूर तक सुनी है। आपकी कृपा हो जाए तो मेरी कन्या का भाग्य बन जाएगा।' माघ स्वयं बहुत ही गरीब थे। वह सोचने लगे, 'गरीब ब्राह्मण को क्या दिया जाए? देने के लिए भी तो कुछ नहीं है। क्या इसे खाली हाथ वापस भेजना होगा'? यह सोचते-सोचते उनकी दृष्टि किनारे सोई हुई पत्नी पर पड़ी। उसके हाथों में सोने के कंगन चमक रहे थे। संपत्ति के नाम पर यही उसकी जमा-पूंजी थी। माघ ने सोचा, 'कौन जाने मांगने पर दे या न दे। सोई हुई है, यह अच्छा अवसर है, क्यों न एक कंगन चुपचाप निकाल लिया जाए।' जैसे ही माघ कंगन निकालने लगे, पत्नी की नींद टूट गई और उसने पूछा, 'आप क्यों कंगन निकालना चाहते हैं?' माघ बोले, 'गरीब ब्राह्मण द्वार पर बैठा है। बड़ी आशा लेकर आया है। उसे अपनी युवा पुत्री का विवाह करना है। घर में कुछ और देने को है नहीं। तुम्हें इसलिए नहीं जगाया कि कही तुम कंगन देने से इनकार न कर दो।' पत्नी बोली, 'मुझे आपके साथ रहते इतने वर्ष हो गए, किंतु आज तक आप मुझे पहचान न पाए। आप तो एक ही कंगन ले जाने की सोच रहे थे, लेकिन आप मेरा सर्वस्व भी ले जाएं तो भी मैं प्रसन्न होऊंगी। पत्नी का इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा कि वह पति के साथ मानव कल्याण के काम आती रहे।' यह कहकर माघ की पत्नी ने अपने दोनों कंगन बाहर बैठे बाह्मण को दे दिये। माघ और उनकी पत्नी की उदारता से प्रभावित वह ब्राह्मण आंख में आंसू लिए वहां से चल पड़ा। दरअसल हाथों की शोभा दान देने में है, कंगन से नहीं।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल) में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

एनसीएल में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया । हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं, हिन्दी संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें स्टाफ एवं शोध छात्रों ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग लिया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2016 को हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ एवं गृहपत्रिका 'एनसीएल आलोक' का लोकार्पण किया गया एवं साथ ही रिसेप्शन में एनसीएल के उद्देश्य को दर्शाने वाले वाक्य के हिन्दी रूपांतरण का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पुणे विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. सदानंद भोसले तथा अध्यक्ष के रूप में डॉ. प्रदीप कुमार त्रिपाठी (अध्यक्ष – कार्बनिक रसायन प्रभाग एवं प्रमुख वरिष्ठ वैज्ञानिक) उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि डॉ. सदानंद भोसले ने अपने संबोधन में कहा कि 'आज विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर हिन्दी का प्रयोग और लोकप्रियता बढ़ रही है। अपनी सरलता–सहजता के बल पर हिन्दी मीडिया, वाणिज्य, उद्योग–व्यापार इत्यादि क्षेत्रों में केवल भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में अपने पंख पसार रही है। इसके बावजूद भी हम सभी भारतीयों को इस भाषा के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान देने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा, रोजगार और प्रशासन के क्षेत्र में इस भाषा को अच्छी तरह से लागू किया जा सके'। उन्होंने एनसीएल द्वारा राजभाषा पत्रिका एनसीएल आलोक के प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि 'विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखों को जन मानस की सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, इससे निश्चय ही हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार होगा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी इस भाषा का उपयोग बढ़ेगा'।

कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि – 'हिन्दी हमारे राष्ट्र की भाषा है, हमारे देश की पहचान है। इस अवसर पर हम सभी यह संकल्प करें कि केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से देश की अखण्डता बनाए रखेंगे । हमारे एनसीएल में हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन तथा अन्य सभी क्षेत्रों में संतोषजनक प्रयोग हो रहा है। हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन, वेबसाईट का द्विभाषीकरण तथा हिन्दी माध्यम से संगोष्ठियों का आयोजन हमारी हिन्दी भाषा के प्रति निष्ठा का प्रमाण है'। उन्होंने उपस्थित स्टाफ सदस्यों से अपील की कि 'सभी वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी बिना किसी हिचक के राजभाषा हिन्दी में कार्य करें और अपने राजभाषा संबंधी दायित्वों को निभाएं। यह अत्यंत आवश्यक है कि अनुभाग/प्रभाग प्रमुखों को इस दिशा में पहल करनी होगी, वे स्वयं भी हिन्दी में कार्य करें तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने एवं हिन्दी पखवाड़ा के दौरान सभी गतिविधियों में प्रतिभागिता के लिए प्रोत्साहित करें'।

तत्पश्चात् हिन्दी अधिकारी डॉ. श्रीमती स्वाति चढ्ढा द्वारा हिन्दी पखवाड़े की प्रस्तावना प्रस्तुत की गई । कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एम.एस. कुरैशी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला, हिन्दी शुद्धलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी काव्यपाठ प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, शब्दज्ञान प्रतियोगिता एवं हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इन सभी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार दिनांक 29 सितंबर 2016 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में प्रदान किए गए। इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में निदेशक प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया, मुख्य अतिथि के रूप में एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया की राजभाषा अधिकारी श्रीमती रीता मलिक, हिन्दी पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. एम.एस. कुरैशी, वित्त एवं लेखा अधिकारी श्री. एम. शेखर, प्रशासन नियंत्रक श्रीमती प्रेमा बालाकृष्णन एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. श्रीमती स्वाति चढ्ढा उपस्थित थी।

समारोह के आरंभ में डॉ. एम.एस. कुरैशी ने हिन्दी पखवाड़े की प्रासंगिकता एवं इस दौरान आयोजित गतिविधियों की जानकारी दी। तत्पश्चात् श्री अभिषेक चंद्रा द्वारा प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित कविता पर अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुति प्रदान की गई ।

मुख्य अतिथि श्रीमती रीता मलिक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि 'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी अपनी भाषा हिन्दी का मान देश का मान है। विश्व स्तर पर हमारी अपनी पहचान हमारी राष्ट्रभाषा, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान से ही होती है और हिन्दी तो हमारी राजभाषा भी है। हमें हिन्दी में कार्य करते समय हिन्दी भाषा के सरल रूप को अपनाना चाहिए और सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को चाहिए कि वे मूल रूप से हिन्दी में ही कार्य करें, इसे अनुवाद की भाषा न बनाए।'

कार्यक्रम के अध्यक्ष निदेशक प्रो. अश्विनी कुमार नांगिया जी ने कहा कि – 'जिस प्रकार हम अपने राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगीत का सम्मान करते हैं, उसी तरह हम सबको अपनी राजभाषा–राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी सम्मान करना चाहिए और अपनी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करके उसके विकास में अपना योगदान देना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हमारी प्रयोगशाला के सभी वैज्ञानिक और अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करके राष्ट्रसेवा में अपना अमूल्य योगदान देंगे'।

इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का उल्लेखनीय प्रयोग करने वाले अधिकारियों / कर्मचारियों को अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अंत में श्रीमती प्रेमा बालकृष्णन, प्रशासन नियंत्रक ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह की कार्यवाही का संचालन हिन्दी अधिकारी डॉ. श्रीमती स्वाति चढ्ढा ने किया। हिन्दी पखवाड़ा आयोजन हेतु डॉ. एम.एस. कुरैशी, श्रीमती शुचिश्वेता केंदुरकर, श्रीमती गौरी मांडे, श्री सुभाषचंद्र मिश्र ने सहयोग प्रदान किया।

❑❑❑

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

सोशल मीडिया में हिंदी –

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कंप्यूटर, लेपटॉप, मोबाईल आदि की भूमिका

श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा, सहायक निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, पुणे

जैसा कि आप जानते ही हैं आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। हिंदी और हमारी भारतीय भाषाओं के लिए तो स्वर्णयुग कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । आज हिंदी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है।

कंप्यूटरों में हिंदी में एवं अन्य भारतीय भाषाओं में मैं करीबन 2001 से गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत यूनिकोड में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दे रहा हूँ। विंडोज 2000 से लेकर वर्तमान में उपलब्ध विंडोज 10 तक के सारे कंप्यूटरों/लैपटॉप में सभी भारतीय भाषाओं में 1 मिनट से भी कम समय में यूनिकोड सक्रिय कर किसी भी की – बोर्ड में, जिसे आप जानते हैं, उसमें आसानी से काम किया जा सकता है। अलग से कंप्यूटरों के लिए किसी भी प्रकार का सॉफ्टवेयर खरीदने या फोंट इन्स्टॉल करने की आवश्यकता ही नहीं है। सन 2000 से लेकर आज तक मुझे तो किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं आई है। बस फर्क है तो इतना कि हमारी मानसिकता हिंदी में या भारतीय भाषाओं में काम करने की होनी चाहिए।

रही बात सोशल मीडिया में फेसबुक, व्हाट्सएप, मैसेंजर, ट्विटर, एसएमएस या जहां कहीं आप टेक्स्ट लिख सकते हैं वहां पर काम करने की, तो यहां पर भी आप मोबाइल फोन के माध्यम से करीबन 14 भारतीय भाषाओं में टाइप करने, डिक्टेशन देने, सामान्य अनुवाद तथा स्केन कॉपी का अनुवाद करने, मोबाइल फोन के केमरा से फोटो खींचकर और हाथ से मोबाइल फोन की स्क्रीन पर लिखकर अपना काम कर सकते हैं। मोबाइल फोन में वाणी से लेख (स्पीच टू टेक्स्ट) और लेख से वाणी (टेक्स्ट टू स्पीच) की सुविधा हिंदी के साथ–साथ अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है।

अब रही बात इसे मोबाइल फोन में एक्टिवेट करने की, तो इस प्रक्रिया में भी करीबन एक मिनट का ही समय लगता है। करना कैसे है तो इसके लिए कुछ ज्यादा जानने की भी आवश्यकता नहीं है। केवल दो या तीन स्टेप्स हैं जिनके माध्यम से आप अपने फोन को दुनिया के किसी भी कंप्यूटर से कनेक्ट कर सकते हैं और दुनिया के किसी भी कंप्यूटर में, अपने घर में, कार्यालय में या एयरपोर्ट पर कहीं भी

हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है।– शंकराव कप्पीकेरी

बैठकर डॉक्स फार्मेट में डिक्टेशन दे सकते हैं और एडिट भी कर सकते हैं। आप अपने मोबाइल में डिक्टेशन देंगे और दुनिया के किसी भी देश के जिस कंप्यूटर में आप चाहेंगे उसमें जो भी बोलेंगे वह टाइप होगा।

मोबाइल फोन में गूगल वॉइस टाइपिंग सक्रिय करने के लिए टिप्स

1. Go to Mobile Phone Settings
2. Select Language and Input
3. Select Language - Hindi (India)
4. Select - Save
5. Select Google Voice Typing
6. Select Speech Output : On

यह भी उल्लेखनीय है कि हम ज्यादातर माइक्रोसॉफ्ट का विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम प्रयोग करते हैं। आपको पता होगा कि सन 2007 से आपके एमएस ऑफिस में यूनिकोड में सीधे–सीधे हिंदी/अंग्रेजी में अनुवाद करने की सुविधा उपलब्ध है। इसके लिए कोई सॉफ्टवेयर इंस्टॉल नहीं करना है और न ही किसी वेबसाइट पर जाना है। आपकी सारी समस्याओं का हल एमएस वर्ड, एक्सेल, पावर पाइंट में उपलब्ध है। ये सारी सुविधाएं आपके पास कई वर्षों से उपलब्ध हैं।

साथियों, आप इन सभी उपलब्ध आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित सुविधाओं की थोड़ी सी जानकारी प्राप्त करके, इनका इस्तेमाल करके हिंदी एवं सभी भारतीय भाषाओं को शिखर तक पहुंचा सकते हैं। इसके लिए कोई विशेष तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है तो वह है हमारी मानसिकता की, सोच बदलने की।

अब यदि आपके पास थोड़ा सा समय है तो इस सैटिंग्स को अपने मोबाइल फोन में अभी करके देखें :

1. सबसे पहले आप अपने फोन का इंटरनेट कनेक्शन ऑन करें।
2. प्ले स्टोर में जाएं ।
3. गूगल इंडिक की–बोर्ड (Google Indic Keyboard) सर्च (Search) करें।
4. अब Install दिखाई देने के बाद accept पर click करें बस हो गया डाउनलोड।

अब आप फेसबुक, व्हाट्सएप, एसएमएस, ट्विटर, मैसेंजर या जहां कहीं पर भी आप अपने फोन में टेक्स्ट लिख सकते हैं वहां पर उक्त की–बोर्ड के माध्यम से शुद्ध देवनागरी लिपि में टाइप करें। देवनागरी लिपि में नहीं तो अंग्रेजी में टाइप करें वह आपको देवनागरी में दिखाई देगा और यदि आप टाइप नहीं करना चाहते हैं तो वॉयस टाइपिंग के माइक्रोफोन से डिक्टेशन दें, जो भी आप बोल रहे हैं वह टाइप हो जाएगा। यदि आप डिक्टेशन भी नहीं देना चाहते तो अपने मोबाइल फोन की स्क्रीन पर मैसेज बॉक्स की जगह में देवनागरी लिपि में या अंग्रेजी में उंगली से लिखें। आप जो भी लिख रहे हैं वह पूरा–पूरा टाइप हो जाएगा । अब किस बात का इंतजार है। उठाएं अपना मोबाइल और भेज दें मैसेज।

साथियों, अपनी भाषा में अपने साथियों को शुभकामनाएं देने एवं अन्य किसी भी प्रकार की खुशखबरी या सूचना देने की बात ही कुछ और होती है। है न मजेदार बात।

आप इन सब टूल्स का प्रयोग बड़ी आसानी से कर सकते हैं और हिंदी का जो स्थान होना चाहिए वह आप दिला सकते हैं।

॥ जय हिंद–जय हिंदी ॥

❑ ❑ ❑

हिंदी भारत की एकात्मता

श्री महेंद्र कुमार मिश्र, हिन्दी अधिकारी, वैमनीकॉम, पुणे

किसी भी राष्ट्र की सामासिक, सांस्कृतिक चेतना एवं विकास की संवाहिका उस राष्ट्र की भाषा ही हो सकती है जिसकी जड़े वहाँ के जनमानस में रची–बसी हों। यथार्थ रुप में उस देश की भाषा में ही उसकी निजता और अस्मिता की अभिव्यक्ति हो सकती है। भारत जैसे अति प्राचीन विशाल एवं गौरवशाली राष्ट्र की जीवन चेतना की प्राचीन काल में अभिव्यक्ति संस्कृत भाषा में होती थी। संस्कृत वह भाषा थी जो पूरे देश को एक सूत्र में बाँधे हुए थी। अन्यथा, यह कैसे संभव होता कि 08 वर्ष का बालक शंकर ठेठ केरल से चलकर, पूरे देश के शास्त्रीय दिग्विजय में सफल हो गया।

आज भारतीय लोकमानस के साथ निर्बंध संपर्क स्थापित करने की अकेली भाषा हिंदी है। भाषा और संस्कृति का आपस में अटूट संबंध है। भाषा के अभाव में सांस्कृतिक चेतना की और सांस्कृतिक चेतना के अभाव में राष्ट्र की कल्पना करना ही व्यर्थ है। इसलिए राष्ट्र और राष्ट्रीयता के प्रति आस्थावान व्यक्ति के लिए भाषा के प्रश्न कभी उपेक्षणीय नहीं हो सकते है। सच्चा राष्ट्र प्रेमी अपनी राष्ट्रभाषा से उतना ही प्रेम करेगा जितना अपनी माँ से। भारत को जिन्होंने अपना राष्ट्र समझा और उसके प्रति उनकी

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन

अटूट आस्था रही है, उन्होंने हिंदी की पैरवी की और उसे राष्ट्रीय एकात्मकता की प्रतीक भाषा के रुप में स्वीकारोक्ति दी।

हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का नारा हिंदी भाषियों ने नहीं दिया बल्कि गैर हिंदी प्रदेश के उन राष्ट्र चिंतकों और मनीषियों ने दिया, जो भारत के सांस्कृतिक जागरण का शंखनाद कर रहे थे तथा इसे राष्ट्र के रुप में देखना चाहते थे। वे राष्ट्रभाषा के नवोत्थान के ध्वज वाहक थे। वे राष्ट्रीय चेतना को अपनी समग्रता में उग्र रुप में उभारने का संकल्प अपने नाम में संजोये थे । ऐसे राष्ट्र चिंतकों में राजा राममोहन रॉय, केशव चंद्रसेन, सुभाषचंद्र बोस, राजर्षि पुरषोत्तम दास टंडन, शारदा चरण मित्रा, कविवर रविंद्र नाथ टैगोर, महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, बाल गंगाधर तिलक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, महात्मा मदन मोहन मालवीय, संविधान विशेषज्ञ आयंगर, सुब्रमण्यम भारती, राजर्षि राजगोपालचारी, बंकिमचंद्र चटर्जी, काका कालेलकर, रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर, वल्लभभाई पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ. जाकिर हुसैन, डॉ.वी.वी. गिरी, इत्यादि प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं की यह दृढ धारणा थी कि यदि हिंदी को भारत वर्ष की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाए, तो सहज ही राष्ट्र की एकता का भाव संपन्न हो जाएगा।

प्रसिद्ध राष्ट्र चिंतक श्री सत्यनारायण मोदूरि ने कुछ इसी प्रकार की धारणा से ओत प्रोत होकर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा था, ''हिंदी आंदोलन हिंदी भाषा का आंदोलन नहीं, हिंदी भाषा–भाषियों का आंदोलन नहीं, बल्कि यह है – हिंदुस्तान के संस्कृति पुनरुत्थान का आंदोलन – हिंदुस्तान की भाषाओं के पुनरुत्थान का आंदोलन – हिंदुस्तान की सभ्यता को ठीक–ठाक दिग्दर्शन कराने की प्रवृत्तियों को फिर से पुनर्जीवित करने का आंदोलन है''। पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था – 'राष्ट्रभाषा केवल एक ही भाषा हो सकती है और यदि उसे हम भारत की भाषा बनाना चाहते हैं तो हिंदी ही हमारी राष्ट्र भाषा हो सकती है। राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है''। उन्होंने कहा कि कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है जब तक वह अपनी भाषा नहीं बोलता। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा था ''कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है और ना ही अपनी भावना की अभिव्यक्ति ही कर सकता है। राष्ट्रीयता की भाषा तथा साहित्य के साथ गहरा संबंध है''।

भारतीय लोकतंत्र के महान शिल्पी पं. जवाहरलाल नेहरुजी ने कहा था''हिंदी को राष्ट्रभाषा होना चाहिए''। भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था 'हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है''। भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था – ''हिंदी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है''। अंग्रेजी के कारण समस्त देश में हिंदी की प्रगति को रोका नहीं जा सकता है। देश की बहुसंख्यक जनता हिंदी बोलती और समझती है। डॉ. जाकिर हुसैन जी ने कहा था 'राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी है। हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषा रुपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगी। हिंदी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी'।

हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने हिंदी को राष्ट्रीय एकात्मता का सबसे सशक्त माध्यम मानकर ही उसे राष्ट्र भाषा के रुप में स्वीकार किया था। पर आज हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में प्रस्तुत न करके संपर्क भाषा के रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है। राष्ट्रभाषा के रुप में राष्ट्रीय चेतना का जो व्यापक भाव निहित है वह संपर्क भाषा के सीमित भावबोध में नहीं आ सकता है। भारत को विश्व के एक गौरवशाली राष्ट्र के रुप में अपनी अस्मिता की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए एक श्रेष्ठ राष्ट्रभाषा ही चाहिए, केवल संपर्क भाषा नहीं। इस पर राष्ट्र प्रेमियों को अब गंभीर चिंतन करने का समय आ गया है।

❑❑❑

हमारी राजभाषा हिन्दी का महत्त्व

श्री विराट पंड्या, वरिष्ठ शोध छात्र, कार्बनिक रसायन प्रभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और अपनी एक संस्कृति है, जिस छांव में उस देश के लोग पले बड़े होते है। यदि कोई देश अपनी मूल भाषा को छोड़कर दूसरे देश की भाषा पर आश्रित होता है उसे सांस्कृतिक रूप से गुलाम माना जाता है। जिस भाषा को लोग अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक बोलते हैं लेकिन कामकाज में उसे न अपनाकर आधिकारिक रूप से दूसरी भाषा पर निर्भर रहना पड़े तो कहीं न कहीं उस देश के विकास में बाधा आती है। आप कल्पना कर सकते हैं कि जो भाषा हम अपने बचपन से बोलते आ रहे हैं, उसी भाषा में अपने सारे कार्य करने पड़े तो आपको आगे बढ़ने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी, लेकिन यदि आप जो भाषा बोलते आ रहे हैं उसे छोड़कर किसी दूसरी भाषा में आपको कार्य करना पड़े तो कहीं न कहीं यही दूसरी भाषा हमारे विकास में बाधक जरूर बनती है।

यदि हमें दूसरों की भाषा सीखने का मौका मिले तो यह अच्छी बात है लेकिन दूसरों की भाषा के चलते अपनी मातृभाषा को छोड़ना पड़े तो कहीं न कहीं दिक्कत का सामना जरूर करना पड़ता है। आज मैं यहां बात कर रहा हूँ अपने देश भारत की राजभाषा हिन्दी के बारे में, जो हमारी मातृभाषा भी है और हमें इसे बोलने में गर्व महसूस करना चाहिए।

हमारे देश की मूल भाषा हिन्दी है लेकिन भारत में अंग्रेजों की गुलामी के बाद हमारे देश की भाषा पर भी अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य हुआ। हमारा भारत देश तो आजाद हो गया लेकिन हिन्दी भाषा पर अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य आज तक कायम है। अक्सर अपने देश के लोगों के मुंह से यह कहते हुए सुना जाता है कि हमारी हिन्दी थोड़ी कमजोर है, ऐसा कहने का तात्पर्य यही होता है कि उनकी अंग्रेजी भाषा हिन्दी के मुकाबले काफी अच्छी है और यदि भूल से कह दे कि हमारी अंग्रेजी कमजोर है तो उसे लोग कम पढ़ा–लिखा मान लेते हैं। क्या यह सही है कि किसी भाषा पर अगर हमारी अच्छी पकड़ न हो तो क्या हमें अनपढ़ मान लिया जाय? ऐसा होना हमारे देश की विडम्बना बन गई है।

आज आप सभी को मैं हिन्दी भाषा के बारे में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण तथ्य बताता हूँ जिसे आप सभी जानकर जरूर अपनी राजभाषा हिन्दी पर गर्व महसूस करेंगे।

भले ही आज हमारी सारी पढ़ाई–लिखाई और सारे कार्य अंग्रेजी में होते हों लेकिन भारत के लोगों की मूलभाषा हिन्दी है और आप भारत के किसी भी कोने में चले जाईये अगर आपको हिन्दी बोलनी आती है तो आपको वहाँ रहने व कार्य करने में कोई परेशानी नहीं होगी। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो पूरे भारत देश को एकता में जोड़ती है, तो आईये जानते हैं हमारे देश में हिन्दी भाषा का महत्त्व :

1. हिन्दी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के सिन्धु शब्द से हुई है। सिन्धु नदी के क्षेत्र में आने के कारण ईरानी लोग सिन्धु न कहकर हिन्दू कहने लगे जिसके कारण यहाँ के लोग हिन्द, हिन्दू और हिंदुस्तानी कहलाने लगे।

देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है।– श्री गोविंददास

2. हिन्दी भारत की संवैधानिक राजभाषा है जिसे 14 सितम्बर 1949 को अधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

3. भारत में अनेक भाषाएं और बोलियां बोली जाती है। हमारे देश में इतनी भाषाएं हैं कि ये कहावत कही गयी है ''कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी''

अर्थात हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और 4 कोस पर भाषा यानि वाणी भी बदल जाती है लेकिन इन सभी भाषाओं में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है।

4. हिन्दी विश्व की चीनी भाषा के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है, हिन्दी हमारे देश भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल इत्यादि अनेकों देशों में सबसे अधिक बोली जाती है।

5. भारत के अतिरिक्त जहाँ जहाँ प्रवासी भारतीय रहते हैं उनमें भी अधिक संख्या में हिन्दी बोली जाती है, जैसे अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, यमन, कनाडा, युंगाडा, सिंगापूर, न्यूजीलैंड, जर्मनी, ब्रिटेन के अतिरिक्त बहुत से देशों में बोली जाती है।

6. विश्व की सबसे उन्नत भाषाओं में हिन्दी भाषा सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है अर्थात हम जो हिन्दी में लिखते हैं वही बोलते भी हैं और वही उसका मतलब भी होता है जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं हैं।

7. हिन्दी भाषा बोलने में सबसे अधिक सरल और लचीली भाषा है। हिन्दी भाषा को बोलना और समझना बहुत ही आसान है।

8. दुनिया की एकमात्र हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो कि सबसे अधिक और तेजी से प्रसारित होने वाली भाषाओं में से एक है।

9. हिन्दी भाषा का शब्दकोष बहुत ही बड़ा है, हिन्दी भाषा में अपनी किसी भी एक भावना को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द हैं जो कि अन्य भाषाओं की तुलना में अपने आप में अद्भुत है।

10. हिन्दी भाषा को लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है, जिससे कि हिन्दी भाषा वैज्ञानिक तथ्यों पर खरी उतरती है।

11. हिन्दी भाषा के मूल शब्दों में लगभग ढाई लाख से अधिक शब्द हैं और हिन्दी भाषा की यह भी विशेषता है कि देशी और बोले जाने वाली बोलियों के शब्दों को अपने आप में आत्मसात कर लेती है।

12. हिन्दी भाषा अपने आप में इतनी महत्त्वपूर्ण है कि हिन्दी के सभी साहित्य सभी दृष्टियों से परिपूर्ण हैं।

13. हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कई बार आन्दोलन हो चुके हैं, सबसे पहले दयानंद सरस्वती जी ने इसके लिए आंदोलन किया था, जिसे बाद में महात्मा गांधीजी ने भी चलाया।

14. कंप्यूटर और मोबाइल के आ जाने के बाद पूरे विश्व में सूचना क्रांति आ गयी और लोग घर बैठे इन्टरनेट पर विश्व की कहीं भी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं, जिसके कारण कम्प्यूटर क्रांति में भी हिन्दी का तेजी से प्रचार–प्रसार हो रहा है।

15. हिन्दी भाषा की इतनी अधिक मांग है कि दुनिया के सबसे बड़े 'सर्च इंजन गूगल' ने भी वर्ष 2009 में हिन्दी भाषा को अपना लिया और हिन्दी की लोकप्रियता इतनी अधिक है कि दूसरी भाषा के मुकाबले हिन्दी 94% की वृद्धि दर से सबसे आगे बढ़ने वाली भाषा है जिसे गूगल भी मानता है।

16. हिन्दी भाषा का महत्त्व इन्टरनेट की दुनिया में इतनी तेजी से बढ़ा है कि इन्टरनेट पर लाखों वेबसाइट, ब्लॉग्स, चेट्स, ई–मेल, सर्च इंजन, एसएमएस जैसे अनेक प्रकार के हिन्दी मोबाइल एप्प मौजूद हैं।

17. एक समय ऐसा सोचा जाता था कि कंप्यूटर और इन्टरनेट केवल अंग्रेजी भाषाओं के लिए हैं, लेकिन हिन्दी भाषा की इतनी अधिक मांग है कि अब हर जगह इन्टरनेट पर हिन्दी भाषा के रूप में कुछ भी खोज (Search) कर सकते हैं और कुछ भी जानकारी हिन्दी में भी प्राप्त कर सकते हैं।

18. हिन्दी भाषा का हिन्दी सिनेमा पर भी खास प्रभाव है। पूरे भारत में हिन्दी सिनेमा लोगों के दिलो की धड़कन है और हिन्दी गाने तो लोगों के दिल को सुकून देने वाले होते हैं।

19. हिन्दी भाषा इतनी अधिक प्रसिद्ध है कि कोई भी सोशल नेटवर्क साइट बिना हिन्दी को अपनाये आगे तरक्की नहीं पा सकता है। इसका जीता जागता उदाहरण फेसबुक है और यहाँ तक कि गूगल खुद ऑनलाइन हिन्दी टाइपिंग के लिए 'गूगल हिन्दी टाइपिंग टूल' सेवा प्रदान करता है।

❑ ❑ ❑

राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

''संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।''

– **अनुच्छेद** – 343 (1)

''हिंदी भाषा की प्रसार वृद्धि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, तथा उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा जहाँ तक आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।''

– **अनुच्छेद** – 351

राजभाषा अधिनियम 1963 **की धारा** 3 (3) **की मुख्य मदें** :

निम्नलिखित कागजात द्विभाषी (अर्थात हिंदी और अंग्रेजी में) ही जारी किए जाएं :

1) सामान्य आदेश 2) नियम 3) अधिसूचना 4) संकल्प 5) प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट 6) प्रेस विज्ञप्ति 7) संविदा 8) करार 9) अनुज्ञप्ति 10) अनुज्ञा पत्र 11) निविदा सूचना 12) निविदा प्रपत्र 13) संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले कागजात 14) परिपत्र ।

राजभाषा से संबंधित प्रमुख नियम

नियम 5 : हिंदी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं।

नियम 6 : राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अन्तर्गत आने वाले कागजात द्विभाषी जारी हो रहे हैं, यह सुनिश्चित करना उस अधिकारी का दायित्व है जो उन पर हस्ताक्षर कर रहे है।

नियम 7 : क) कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।
ख) ऐसा आवेदन, अपील, अभ्यावेदन अगर हिंदी में हो या उस पर हस्ताक्षर हिंदी में हो तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाएगा ।

नियम 8 : क) कोई भी कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पणी या मसौदा हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

नियम 11: क) सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप में ही छपवाएं या साइक्लोस्टाइल किए जाएं और प्रकाशित किए जाएं।
ख) सभी नामपट्ट सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख एवं लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में (द्विभाषी) ही हों ।

नियम 12: अनुपालन का उत्तरदायित्व –
1) केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह :
क) यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और
ख) इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय किए गए हैं।

साहित्य जगत

त्याग

श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव

अपनी कार से उतर कर मैंने सीधे ऑफिस के अपने केबिन में प्रवेश किया। बैग को टेबल पर रखा और उस पर रखे कागजात तथा फाइलों पर नजर डाली। आज बहुत कम काम निपटाने थे। एक–एक कर मैं उन फाइलों और कागजात को उलट–पुलट कर देखने लगा। अचानक मेरी नजर एक बंद लिफाफे पर पड़ी। शायद कल की डाक से आया था। यह लिफाफा किसी और ने नहीं, मेरे ऑफिस के चपरासी द्वारा भेजा गया था, जिसकी मृत्यु पिछले सप्ताह नदी में डूब जाने से हो गई थी। मैंने उस बंद लिफाफे पर लगे पोस्ट ऑफिस के स्टैम्प पर नजर डाली। यह लिफाफा उसने अपनी मृत्यु के दो दिन पहले पोस्ट किया था, ठीक जिस दिन से वह छुट्टी पर था।

हाथों में लिफाफा लिए मुझे ऑफिस में उसके साथ बिताए पाँच साल की यादें ताजा हो गई। नाटे कद काठी का, गठीला बदन, रंग गेहुंआ, ऑफिस में हाफ पेंट और हाफ बाँहों वाला खाकी शर्ट पहने उसकी उम्र का अनुमान लगाना मुश्किल था। हालाँकि जब पाँच साल पहले मैंने इस ऑफिस में ज्वाइन किया था, तब वह लगभग चौवन वर्ष का होने वाला था। मुझे देखते ही उसने पहले 'सलाम साब' कहा था फिर मेरे हाथों से मेरा बैग लेकर मेरे केबिन में टेबल पर रखते हुए कहा था– ''साब जी, इस टेबल पर बैठने वाले साब लोगों की मैंने पिछले पैंतीस सालों से सेवा की है। अब आपको किसी चीज की जरूरत हो तो मुझसे कहिएगा''। मैंने जब उससे उसका नाम जानना चाहा तो उसने अपने दोनों हाथों को जोड़कर तथा सर को झुका कर कहा, '' साब जी ऐसे तो हमार नाम रामसहाय सहानी है लेकिन ऑफिस में बाबू लोग हमके रामू काका कहत है।'' तब तो मैं भी आप को रामू काका ही कहकर पुकारूँगा। जैसी मर्जी आपकी साब। ''घर में कौन–कौन है? मैंने उससे परिचय बढ़ाना चाहा। ''साब, मेहरी थी। उ तो पिछले साल ही चल बसी। बड़ी बीमार रहती थी। दुई गो बेटी थी। मेहरी के जिंदा रहते ओहकनि के शादी–बिआह कई देहनी साब। सब अपना–अपना घर में रहत है। एगो बिटवा है साब। ओहकरा का आदमी ना बनावे पाइनि साब जी।''

''पढ़ाई–लिखाई कहाँ तक किया है आपका बेटा?'' मैंने उससे पूछा। ''कहावाँ पढाई–लिखाई कइलख ससुरा। आवारा निकल गवा साब। चौथी तक केहुँग पढ़ा है। ओहकरे चिंता त हमके खाय जात ह।'' अभी क्या करता है? ''कुछ नहीं करता है साब। दिन भर आवारगर्दी करत है। रात को दारू पीकर आवत है। हमार मेहरी के कवनों मरे का उमर था। उ त ओहकरे चिंता में बीमार पड़ गई और मर गई।'' कितना उमर है उसका। ''साब, बाइस बरस का हो गवा है लेकिन बुद्धि एको पैसा का नहीं है। मेहरी के मर जाने के बाद लोगों ने कहा कि शादी करा दो तो सुधर जाएगा और घर चलाने वाला भी मिल जाएगा तो मैंने उसकी शादी भी करवा दी लेकिन उसमें कौनो सुधार नहीं आया। उलटे वह अपनी मेहरिया

को ही रोज मारने पीटने लगा। एक दिन वह भागकर अपने मायके चली गई, फिर नाही आई।''

मुझे उसकी घरेलू कहानी बहुत रोचक लग रही थी। लेकिन मेरा इस ऑफिस में पहला दिन था और मुझे अपना काम भी समझना था, बाकी के सहकर्मियों से परिचय बढ़ाना भी जरूरी था, इसलिए मैंने बात आगे नहीं बढ़ाई। फिर मैं समय मिलते ही उसके घर का समाचार लेता। उसकी बात-चीत से मुझे महसूस हुआ कि वह अपने बेटे के भविष्य के लिए बहुत चिंतित रहता था। वह अपने बेटे की करतूत को अक्सर मुझसे साझा करता।

एक दिन उसने मुझसे बताया कि वह अपनी बहू के मायके गया था। उसने बहू को बहुत समझाया कि तुम उसके साथ रहोगी तो धीरे-धीरे सुधर जाएगा। बहू आने को तैयार थी लेकिन उसके माता-पिता ने उसे साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक वह कोई काम नहीं करता और शराब पीना नहीं बंद करता तब तक वे अपनी बेटी को ससुराल नहीं भेजेंगे।

एक दिन जब मैंने उसे देखा तो उसके चेहरे पर चोट के कुछ निशान दिखाई दिए। मैंने उससे पूछा-''क्या हुआ रामू काका, चोट कैसे लगी?'' उसने बड़े उदास मन से कहना शुरू किया- ''क्या कहूँ साब जी। कल रात में शराब के नशे में हमार बिटवा ने हमको बहुत मारा।''

''क्यों मारा?'' मुझे यह सुनकर बहुत गुस्सा आ रहा था।'' साब जी रूपया माँग रहा था। वेतन मिलते ही आधे से ज्यादा वेतन तो वही ले लेता है। बाकी के आधे में किसी तरह घर का खर्चा और उधारी वापस करता हूँ। अब महीना का अंत चल रहा है तो मैं कहाँ से रूपया दूँ साब जी। इसी बात पर मुझसे लड़ने लगा और मुझपर हाथ चला दिया। मैंने जब उसे रोकना चाहा तो मुझे बहुत मारा।''

''तुम उसके हाथ में पैसे क्यों देते हो?'' ''साब देता कहाँ हूँ जबरदस्ती छीन लेता है। ''तुम उसके लिए कुछ काम की व्यवस्था क्यों नहीं कर देते। कम से कम अपना और अपने पत्नी का तो पेट पालता।'' ''साहब कौन रखेगा उसको काम पे? कुछ रूपया लगाकर एक दुकान खोल दिया था वह भी नहीं चला पाया। सब बेचकर दारू और जुए में उड़ा दिया। रिक्शा खरीद दिया था कि उसे चलाकर कुछ कमाएगा तो वो भी किसी को बेचकर जुए में उड़ा दिया। मेहरी के सब गहने, घर के सारे बर्तन बेच दिए है ससुरे ने।'' तो तुम उसे घर से निकाल क्यों नहीं देते? अपने माथे पर पड़ेगा तो सब सीख जाएगा। ''नाही साब कैसे निकाल दूँ। वह मेरी एकमात्र औलाद है। मैं मरूँगा तो उसी के हाथों मुझे मुक्ति मिलेगी साब जी। मेरे घर का चिराग है साब। जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक उसके लिए कुछ न कुछ तो कर ही जाऊँगा, आखिर जब मैंने उसकों जनम दिया है तो करम भी देना मेरा ही जिम्मेवारी है न साब''।

मुझे उसे अपने बेटे के प्रति आये इस प्रेम से गुस्सा भी आ रहा था और उसकी इस सोच से आश्चर्य भी हो रहा था। उसे लगता था कि वो अपने बेटे को कहीं सेट ना करके अपनी जिम्मेवारी नहीं निभा पा रहा है। अक्सर वो इस बात का रोना रोता कि वह अपने बेटे को लायक नहीं बना पा रहा है। उसकी बातचीत से लगा कि उसके बेटे को बचपन के लाड़-प्यार ने बिगाड़ दिया। दो बेटियों के बाद एक बेटा हुआ था। उसकी देख-भाल में पति-पत्नी ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेकिन बेटे ने उनके लाड़-प्यार का जम कर मजा उठाया था। बहुत कम उमर में ही वह नशे का आदी बन गया था। अक्सर नशे में धुत होकर वह घर आता। अपनी माँ और बहनों से लड़ता। घर से गहने और कीमती वस्तुएँ चुराकर बेच देता और जुआ खेल जाता। माँ उसके इस स्वभाव से बहुत दुखी रहती। बेटियों की शादी में अच्छा-खासा खर्च हुआ। काफी कर्ज ले लिए गए थे। उसे वापस किया जा रहा था। घर में अब बेचने लायक कुछ नहीं बचा था। अब वह माँ से हमेशा पैसे के लिए लड़ता। बात-बात पर मारने पर उतारू हो जाता। हाथा-पाई भी कर लेता। माँ चिंतित रहने लगी। फिर धीरे-धीरे बीमार रहने लगी और अचानक एक दिन चल बसी।

रामू काका के साथ काम करते हुए मुझे पाँच साल हो गए थे। पंद्रह दिन पहले ही मुझे प्रोन्नति मिली थी। मेरी बदली का भी आदेश आ गया था। अगले महीने मुझे दूसरे जगह पर चले जाने था। जब रामू काका को यह समाचार मिला तो वह मेरे पास आये और बोले-''साब जी, अब तो आप हमन के छोड़के चले जाइएगा।'' हाँ, वो तो जाना पड़ेगा। लेकिन आप की बहुत याद आयेगी। आप को भूल पाना मुश्किल है।''

साब, जाते जाते मेरी एक विनती सुन लेह जात तो बहुत मेहरबानी होत।'' क्या बात है बोलो?'' ''साब, आप तो अब बड़े साब हो गए हैं। मेरे बेटे को कसहु सेट कर देते तो मैं निश्चिंत हो जाता।''

मैं उनकी बातों को सुनकर मुस्कुराने लगा और बोला, ''यह तो सरकारी ऑफिस है और यहाँ किसी को नौकरी देना किसी के बस की बात नहीं। यहाँ तो केवल कम्पीटिशन के माध्यम से ही नौकरी मिलती है। ''फिर वे हाथ जोड़कर कहने लगे, ''कोई उपाय कीजिए साब जी। हमार नौकरी औरो एक साल का है। उसके बाद उसका क्या होगा साब जी। कवनो रास्ता निकालिए।'' मैंने हँसते–हँसते मजाकिया अंदाज में उनसे कहा–''तो फिर आपको मरना होगा तभी आपकी जगह पर आपके बेटे की नौकरी होगी।'' इतना कह कर मैं अपने काम में व्यस्त हो गया था।

अगले दिन रामू काका छुट्टी का आवेदन लेकर मेरे पास पहुँचे। मैंने उन्हें दो दिनों की छुट्टी मंजूर की, लेकिन पाँच दिनों के बाद भी जब वे ऑफिस नहीं आये तो उनके घर पर खबर भिजवायी गयी। पता चला कि वे नदी में नहाने गए थे। उन्हें तैरना नहीं आता था, वे उसी में डूब कर मर गए। इस समाचार को सुन कर पूरा ऑफिस सन्न रह गया था। काम और व्यवहार से वे हमारे ऑफिस में सबके चहेते थे।

मैं उनकी इन यादों में इस तरह खो गया था कि मुझे लिफाफे को खोलने की सुध नहीं रही। तुरंत मैंने लिफाफे को खोला। उसमे एक छोटे से कागज के टुकड़े में रामू काका ने जो लिखा था वह पढ़कर मैं अपने आँसू नहीं रोक पाया। उसमें लिखा था– ''साब जी मैं आपकी सलाह मान ले रहा हूँ। आप हमार बिटवा को मेरी जगह पर जरूर नौकरी दिलवा दीजिएगा। जब बाप का सब फर्ज निभाए है तो इस अंतिम फर्ज को निभाने से मैं पीछे काहे हटू साब। नमस्कार।''

❑❑❑

हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है।– श्री छविनाथ पांडेय

हमारी पर्यटन यात्रा

श्री सुभाषचंद्र मिश्रा, प्रशासन नियंत्रक का सचिवालय, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

मनमोहक दृश्य और हृदय को छू लेने वाली गंगा की लहरों से लहराता प्रदेश उत्तराखण्ड प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति और सुखद वातावरण के साथ ही आस्था का विशेष केंद्र भी है। इस सुखद यात्रा का अनुभव मुझे हाल ही में प्राप्त हुआ। हम मई महीने में अकेले ही पुणे से दिल्ली निकल पड़े थे, दिल में बहुत अरमान था कि अगर कोई मित्र दिल्ली से साथ में कहीं घूमने चला चले तो बहुत अच्छा होगा। मन में उथल पुथल के साथ हम दुरान्तो ट्रेन से दिल्ली चल पड़े और दिल्ली पहुँच कर निजामुद्दीन स्टेशन से अपने मित्र के पास पहुँचे। हमारे प्रिय मित्र ने पहले हमें गले लगाया और फिर कुशल क्षेम पूछने के बाद दूसरे दिन हरिद्वार चलने का प्रस्ताव रखा।

हम अपने मित्र के इस अनुरोध को स्वीकार कर दूसरे दिन सुबह 5 बजे हरिद्वार के लिए कार से निकल पड़े । दिल्ली हरिद्वार के बीच चीतल होटल में हल्का नाश्ता करने के बाद फिर से चल पड़े और करीब 10 बजे हरिद्वार में हर की पौड़ी में पहुँचे। मित्र ने कहा यही हर की पौड़ी में ही नहाना चाहिए। यहाँ का जल बहुत शीतल होता है। गर्मी का महीना था अत: दोनों नहाने के लिए बिलकुल आतुर थे। प्रश्न यह था कि पहले कौन? क्योंकि साथ में बैग था जिसमें पैसे आदि थे। हमने घाट के पंडे से पूछा कि क्या हम बैग आप के पास रख सकते हैं? उसने कहा कि साहब 100 रुपए लगेंगे। हमारा मित्र बहुत समझदार है उसने कहा कि हम साथ में जरूर नहाएंगे और बैग यहीं घाट पर ही रखेंगे, फिर हम किनारे पर लगी चेन को पकड़कर नहाने गंगा जी में उतर गए। हमारे मित्र ने डुबकी लगाते समय हमारा हाथ पकड़कर डुबकी लगाई और बहुत मजे में हम दोनों ने स्नान किया। उसके बाद मार्केट में ही चाय की दुकान पर चाय पी और प्रसाद तथा कुछ पूजा की सामग्री खरीदी । लौटते समय रुड़की में कुछ फल खरीदे और गन्ने का रस पिया, फिर वापस चीतल होटल में लंच खाया। उसके बाद हरिद्वार के अन्य स्थलों की सैर की।

हरिद्वार के बारे में यह कहा गया है कि–धार्मिक स्थलों में हरिद्वार का विशेष महत्व इसलिए भी है, क्योंकि यहाँ कुम्भ यात्रा होती है और यह पावन गंगा के प्राचीनतम नगरों में से एक है। हरिद्वार का अन्य प्राचीन नाम कपिल स्थान भी है। हिन्दुओं का पवित्र धार्मिक स्थान होने के साथ ही पर्यटन स्थलों के रूप में भी जाना जाता है।

दार्शनिक स्थल :

हर की पौड़ी

यह हरिद्वार का सबसे प्रमुख घाट है। यहाँ प्रत्येक दिन लोग हजारों की संख्या में आते हैं। इस घाट पर पुजारियों के साथ ही अन्य संस्कारों की पूजा की जाती है। मंदिर स्थल पूरी तरह से अनेक प्राचीन कलाकृतियों व मूर्तियों से सुसज्जित है। यात्रियों द्वारा यहाँ पर स्नान, पूजा, फूल चढ़ावा आदि किया जाता है, जबकि प्रतिदिन सुबह–शाम यहाँ पर गंगा जी की विशेष आरती की जाती है, जिसमें भक्तों के साथ ही हजारों दीप जगमगाते नजर आते हैं। जब गंगा की लहरों में तैरते दीपक लहराते नजर आते हैं तो सम्पूर्ण वातावरण भक्ति भाव में डूब जाता है, शंख ध्वनि के साथ ही हजारों भक्तों द्वारा आरती का गान किया जाता है।

मनसा देवी मंदिर

हर की पौड़ी से लगभग 2 किमी की दूरी पर यह मंदिर बिलवा पर्वत पर स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के लिए यात्री पैदल और रोपवे का इस्तेमाल करते हैं।

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।– श्री रविशंकर शुक्ल

ब्यूटी पॉइंट

मनसा देवी मंदिर मार्ग से करीब दो किमी की दूरी पर यह स्थल स्थित है। यहाँ से हरिद्वार का पूरा मनमोहक दृश्य देखा जा सकता है। हरिद्वार के मैदानी भागों में फैली जलधाराओं, नदियों के ऊपर बने बैराजपुल व प्रकृति का सम्पूर्ण आनंद लिया जाता है।

चंडीदेवी मंदिर

गंगा के एक ओर जहां मनसा देवी का मंदिर है तो वही दूसरी ओर माँ चंडी देवी का मंदिर नील पर्वत पर स्थित है। कहा जाता है कि कश्मीर के राजा सुचात सिंह ने 1929 ई. में बनाया था । चंडी मंदिर तक पहुँचने के लिए छोटी गाड़ियों व घोड़ों से पहुंचा जा सकता है। मंदिर में निलेश्वर, अंजनी देवी व अन्य देवी देवताओं के भक्तिभावपूर्ण दर्शन किए जा सकते है।

भीमगोड़ा सरोवर

यह सरोवर हरिद्वार मे ऐतिहासिक गाथाओं का एक केंद्र रहा है। गाथा है कि जब पाँचो पांडव इसी राह से हिमालय की ओर प्रस्थान कर रहे थे तो उन्होंने यहाँ कुछ समय विश्राम किया। इसके साथ ही यहाँ भीम ने अपने घुटने की शक्ति से इस सरोवर का निर्माण किया था। इस सरोवर में स्नान करना धार्मिक दृष्टि से पुण्यकारी माना जाता है।

सप्तऋषि

हरिद्वार में गंगा विशाल स्वरूप है एवं छोटी–छोटी धाराओं में विभाजित होकर अन्य भू–भागों में बहती है। इन्ही धाराओं में से एक सप्त सरोवर भी विशेष है।

दक्ष महादेव मंदिर व सतीकुंड (कनखल)

हरिद्वार से करीब 5 किमी की दूरी पर स्थित कनखल नामक स्थल पर यह पौराणिक स्थान है। हरिद्वार में इस स्थल का विशेष महत्व रहा है। कहा जाता है कि यह वही स्थल है जहां भगवान शिव ने रुष्ट होकर तांडव नृत्य किया था।

भारत माता मंदिर

भारत माता मंदिर सात मंज़िला भवन के रूप में है। इस मंदिर के निर्माण में शिल्प–मूर्तियों का बेजोड नमूना है। खास बात यह है कि इस मंदिर में देवी–देवताओं, ऋषि मुनियों के साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले लोगों की मूर्तियाँ भी प्रतिष्ठित हैं। हरिद्वार जी भर घूमने के बाद हमने वापस दिल्ली प्रस्थान किया। एक दिन आराम करने के बाद हम दोनों मथुरा के लिए सुबह दिल्ली से रवाना हो गए । करीब तीन घंटे बाद हम मथुरा बृंदावन पहुँच गए और वहाँ पर बाँके बिहारी मंदिर में दर्शन करके प्रेम मंदिर तथा वैष्णो देवी मंदिर गए। उसके बाद एक होटल में लंच किया। करीब दो बजे हम आगरा के लिए निकल गए। आगरा में ताजमहल देखने के लिए टिकिट जरूरी था। हम टिकिट खरीद कर ताजमहल देखने गए। यमुना नदी के तट पर संगमरमर पत्थर से तराशा गया महल देखा। यह महल शाहजहाँ ने बेगम मुमताज़ की याद में बनवाया था। बहुत बड़ा परिसर है, दर्शनीय स्थल है।

हमें भव्य महल को देखकर बहुत खुशी हुई। यमुना के किनारे पर बनाया गया यह विश्व का सातवां अजूबा है। इसे देखने के लिए देशी ही नहीं विदेशी पर्यटक भी भारी संख्या में आते हैं।

इसके बाद हम फिर से मथुरा आ गए, वहाँ पर हमारे बहुत पुराने मित्र हैं। उनसे बात हुई तो कहने लगे आज आप मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि देख लो फिर रात में यहीं रहो। हम दोनों कृष्ण जन्मभूमि के दर्शन करने गए। वहाँ पर सुरक्षा का बहुत कड़ा बंदोबस्त था, बड़ी मुश्किल से मंदिर द्वार पर पहुंचे और वहाँ से मंदिर जा कर आराम से दर्शन किया। प्रसाद खाकर लौटे । बाद में वहीं एक होटल में कमरा बुक कर लिया और रात वहीं रहे। सुबह वहाँ से बृंदावन के लिए निकल पड़े । बृंदावन में हमारे एक अन्य मित्र ने अपने घर में नाश्ता करवाया और कहा कि धूप बहुत है, अत: आप दोनों यहीं आराम कर लो। शाम को बाँके बिहारी की सजावट देखना। बहुत भीड़–भाड़ में भगवान के दर्शन हुए। इतना अच्छा सजाया गया था उस मंदिर और भगवान की मूर्ति को कि दिल खुश हो गया। हम दोनों दोस्त इतने खुश थे कि शब्दों में बयां नहीं कर सकते।

उसके बाद हम दोनों मित्र वहाँ से दिल्ली लौट आए। हमारा परम मित्र दिल्ली में ही रहता है। वह इतने दिन मेरे साथ रहा और अपना घर परिवार छोड़ कर मुझे समय दिया उसके लिए मैं आजीवन उसका ऋणी रहूँगा। अंत में जब मैं पुणे के लिए ट्रेन से घर लौट रहा था तो हम दोनों बहुत भावुक हो गए थे। लेकिन क्या करते? सब का अपना घर परिवार भी था। मैं अपने मित्र को धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे न केवल दिल्ली दर्शन करवाया बल्कि हरिद्वार, मथुरा, आगरा, बृंदावन में भी मेरे साथ रहा। मित्र हो तो ऐसा हो। आप सभी से निवेदन है कि आप लोग भी ऐसे स्थलों का दर्शन जरूर करें, इससे मन प्रसन्न रहता है और नई नई जानकारी भी मिलती है।

आज के दौर में परिवार का महत्व और समस्याएँ

श्री दयाल राम सैनी, बिल ग्रुप, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

परिवार ही एक ऐसी संस्था है जहां से बच्चे जीवन भर के आदर्श और संस्कार सीखते है। परिवार में ही बच्चे धैर्य, विश्वास, स्नेह के सूत्र समझते हैं और परिवार के सभी सदस्य परस्पर स्नेह के बंधन में बंध कर, एक दूसरे को परस्पर सहयोग और सुरक्षा प्रदान करके जीवन यापन करते हैं। इस प्रकार से परिवार एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण घटक है, जो हर व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

लेकिन आज कल की बदलती दुनिया में परिवार का अर्थ ही कहीं खोते जा रहा है। आज लोगों के लिए भौतिक सुख, निजी, स्वार्थ, पद और पैसा ही सब कुछ बनते जा रहा है, परिवार पीछे छूटता जा रहा है।

परिवार में एक दूसरे के प्रति गैर जिम्मेदार रहना भी एक तरह का आतंक है। वैश्विक दृष्टि से देखे तो इस समय दुनिया के सारे देश जिन – जिन समस्याओं से जूझ रहे हैं उनमें से एक बड़ी समस्या है परिवार के ढांचे का ध्वस्त होते जाना । सामाजिक स्थिति तो लगभग सभी देशों में विकृत रूप ले चुकी है, दुनिया में साढ़े छः करोड़ लोग विस्थापित हो गए हैं । यह एक पारिवारिक पीड़ा है। लोग अपने ही घर में सदस्यों को ढूंढ़ रहे हैं। दुनिया की इस भीड़ में अपने लोग कब खो गए, पता ही नहीं चला।

आज हम सब की भी ऐसी ही स्थिति है। बच्चो को पढ़ा लिखाकर उन्हें इतनी योग्यता दी कि उन्होंने सबसे पहली छलांग घर से बाहर ही लगाई। छलांग भी इतनी लंबी कि कई लोगों के तो लौटकर आने की संभावना ही खत्म हो गई । यह उनका गमन हुआ, उत्थान हुआ परंतु लगा जैसे वे पलायन कर गए । आज भी कई परिवार उदास हैं। कई माता–पिता बच्चों से दूर होने का दुख व्यक्त भी नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि वे जानते हैं, इसमें उनकी भूमिका भी है। जब घर के सदस्य बिखर गए तो एक आतंकी संगठन घर में भी प्रवेश कर गया जिसका नाम है अकेलापन । इस समय दुनिया में कई आतंकी संगठन घर में भी भयावह रूप लिए हुए है और हिंसा फैलाकर मानवता को नष्ट कर रहे हैं उसी प्रकार हमारे घरों में भी एक ऐसा ही अनुचित संगठन प्रवेश कर गया है। पाँच–दस लोगों के बीच में रहने के बाद भी लोगों को अकेलापन लगता है।

जिनके हाथों में परिवार का नेतृत्व है वे परिवार को आर्थिक दृढ़ता देते हैं, सामाजिक पहचान देते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उच्चता भी देते है परंतु जिस प्रसन्नता और शांति की परिवार को जरूरत होती है वह नहीं देते हैं। यह उस नेतृत्व को ध्यान देने की जरूरत है कि आप परिवार के जिस पद से नेतृत्व कर रहे हो, उस परिवार की उदासी जरूर मिटाएं । बाकी सदस्यों को प्रसन्नता और शांति जरूर दें।

परिवार के बड़े लोगों का दायित्व है कि वे परिवार को एक–सूत्र में बांध कर रखे और छोटों का भी दायित्व है कि वे अपनी जिम्मेदारियां निभाएं।

❑❑❑

भारत की सारी प्रांतीय भाषाओं का दर्जा समान है।– श्री रविशंकर शुक्ल

महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम

श्री शंभु कुमार, सीएसआईआर–युर्डिप, पुणे

मानव सभ्यता के इतिहास में महिला अस्मिता, उसके समान अधिकार और स्वतंत्रता का प्रश्न सदा से ही उलझनपूर्ण रहा है। महिला को हर व्यवस्था में प्राय: दोयम दर्जा ही दिया गया, इसलिए आज भी आबादी का आधा हिस्सा होने के बावजूद उनकी स्थिति निम्नतर है। यही कारण है कि आज महिला सशक्तिकरण एक ज्वलंत मुद्दा है और महिला को अधिक सशक्त बनाने के लिए विभिन्न आयामों पर ध्यान दिया जा रहा है।

वास्तव में महिला के जीवन के इतने पहलू हैं कि सिर्फ एक प्रावधान या कानून बना देने से महिला सशक्तिकरण सफल नहीं हो जाता है। इसका सबसे बडा उदाहरण हमारा संविधान है, जिसने महिला व पुरूष को बराबर माना और उन्हें विकास के लिए समान अवसरों की गारंटी दी, परंतु आजादी के इतने वर्ष बीत जाने के बावजूद महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन नहीं आया, क्योंकि सामाजिक रवैये में बुनियादी बदलाव नहीं हुए। इसलिए महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर ध्यान देने की जरूरत है।

सिर्फ कानूनी प्रावधानों का उपबंध करके महिला सशक्तिकरण नहीं किया जा सकता है। यह हमने देख लिया है, इसलिए हमें न केवल आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक रूप से महिलाओं को सबल बनाना है बल्कि उन्हें इस प्रकार से सशक्त करना है कि वे जीवन के हर क्षेत्र में अपना निर्णय स्वतंत्र होकर लें। साथ ही खुद महिलाओं को भी अपना आंदोलन चलाना चाहिए, जो समाज के इस दृष्टिकोण को बदल डाले कि ''स्त्री ही स्त्री की सबसे बड़ी शत्रु है''।

सबसे बड़ी चुनौती यही है कि महिलाएं अपने अनेक रूपों यथा बहन, बेटी, पत्नी आदि को सहज रूप में बनाए रखकर अपनी लड़ाई लड़ सकती हैं या नहीं, क्योंकि अति–उच्छृंखलता, अति–उन्मुक्तता, अति–परकीयता भारतीय महिलाओं, भारतीय

परिवेश और पारिवारिकता के विरूद्ध हैं। यदि रचनात्मक जीवन उन्हें जीना है और समाज में अपनी पहचान बनानी है तो उसे पुरुष समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखा को लांघना ही होगा तभी वह परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त होगी और सशक्तिकरण की ओर अपना कदम बढ़ाएगी।

दरअसल सम्पूर्ण विश्व में महिला को संस्थागत तरीके से नियंत्रण में रखा गया है। विश्व के तमाम उत्पादन के साधनों पर उत्तराधिकार कानूनों के माध्यम से पुरूषों का स्वामित्व है और उत्पादन के साधनों पर वर्चस्व बनाए रखने के लिए पुनरोत्पादन के साधनों यानि महिला की देह और कोख पर भी सम्पूर्ण नियंत्रण अनिवार्य है जो विवाह संस्था के माध्यम से बनाया गया है। उत्तराधिकार के लिए वैध संतान और वैध संतान के लिये विवाह संस्था अनिवार्य है। विवाह संस्था से बाहर जन्में बच्चे अवैध हैं। इसलिए पिता की संपत्ति में ये कानूनी वारिस नहीं माने जाते। कानून और न्याय की नजर में वैध संतान पुरूष की और अवैध संतान महिला की होती है। वास्तव में पितृसत्तात्मक संस्था ही महिलाओं की निम्न स्थिति के लिए जिम्मेदार है। संपत्ति का स्वामित्व केवल पुरूषों के नाम और बंटवारा करवाने का अधिकार केवल पुरूषों को। बेटा गर्भ में आते ही संपत्ति का हकदार और बेटियाँ भ्रूण हत्या की शिकार। वास्तव में परिवार या विवाह संस्था के मूल ढांचे में समता और समाज में न्याय यानि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक नींव डाले बिना न कन्या भ्रूण हत्या रोकना संभव होगा न ही टूटते–बिखरते परिवार को बचाना।

वस्तुत: सामाजिक रूप से महिलाओं को भी समानता का अधिकार दिया जाना चाहिए और पारंपरिक रूप से जो पुरूष विशेषाधिकार हैं उन्हें समाज को त्यागना होगा और महिला को सामाजिक रूप से सशक्त बनाना होगा । इसके लिए केंद्र सरकार व विभिन्न राज्य सरकारों ने भी कदम उठाया है और बेटी पढ़ाओ–बेटी बचाओ, प्रोजेक्ट तेजस्विनी, स्वयं सहायता समूह, लाड़ली लक्ष्मी योजना आदि योजनाओं के द्वारा महिला सशक्तिकरण का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही केंद्र सरकार ने इस संदर्भ में 31 जनवरी 1992 को राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन किया।

फिर महिला सशक्तिकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम है आर्थिक सशक्तिकरण। वास्तव में अगर महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो तो वह अपने जीवन से जुड़ा हर फैसला स्वतंत्रतापूर्वक ले सकती है तथा सफलता की हर मंजिल पा सकती है जिसे पुरूषों ने अपना विशेषाधिकार बना रखा है। इसके उदाहरण इंदिरा नूयी, अरूंधती भट्टाचार्य, किरण मजूमदार शॉ आदि हैं जिन्होंने आर्थिक क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है।

महिला सशक्तिकरण का एक बड़ा औज़ार राजनीतिक अधिकार है जिसे संविधान और कानून के विभिन्न प्रावधानों के द्वारा दिया गया है। संविधान द्वारा महिला को सबसे बड़ा राजनीतिक अधिकार 73वां तथा 74वां संविधान संशोधन विधेयक के तहत दिया गया है। इसके तहत उन्हें पंचायती संस्था तथा स्थानीय निकाय में 33% तक आरक्षण दिया गया। इसके फलस्वरूप महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी काफी बढ़ी और वे नीति–निर्माण में अपनी बात मनवा रही है। वास्तव में आधुनिक लोकतन्त्र में राजनीतिक शक्ति के द्वारा ही महिला सशक्तिकरण को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलू महत्त्वपूर्ण हैं। फिर भी अन्य पहलू जिसमें खुद महिला भी शामिल है, महत्त्वपूर्ण है।

❑❑❑

आज के दौर में घटते नैतिक मूल्य – कारण एवं निवारण

श्री जयसिंह यादव, वरिष्ठ शोध छात्र, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

प्रस्तावना – नैतिकता – जिसका वास्तविक मतलब है, ''समाज में हर जगह, हर तरह के चाल–चलन के बारे में लोगों के मानवीय व सदाचारी अथवा व्यावहारिक विचारों का स्तर''। जैसा कि हम जानते है कि भारत की संस्कृति व सभ्यता विश्वविख्यात है, क्योंकि यहाँ नैतिक मूल्यों को आर्थिक व महत्वाकांक्षी मूल्यों से ज्यादा महत्त्व दिया जाता है।

पंडित दीन–दयाल उपाध्याय जी के अनुसार –

''भारत में नैतिकता के सिद्धान्तों को धर्म कहा जाता है''। ईमानदारी, विवेक, सत्यता, ईर्ष्या व कपटता से दूर रहना; पवित्रता, दया ये सभी नैतिक मूल्यों के आदर्श तत्व हैं। परंतु आज के दौर को देखकर लगता है कि संसार नैतिकता के सिद्धांतों को समझना ही नहीं चाहता । आज के दौर में लोग वहीं पर रहना पसंद करते है, जहाँ व्यभिचारिता, लोभ, भ्रष्टाचार व पाप निवास करते हैं।

लोगों ने विकास वाद के सिद्धांत को इस कदर स्वीकार करना शुरू कर दिया है, जैसे नैतिक मूल्य उन्हें पतन का मार्ग नजर आते हैं। लोगों ने इंसानियत जैसे मानवीय गुणों को छोड़, जानवरों की प्रवृत्ति को स्वीकार करना शुरू कर दिया हैं।

कुछ सालों पहले सन् 1945 में नागासाकी व हिरोशिमा में गिराया गया परमाणु बम, इंसानियत के पतन होने की पुष्टि करता है।

आज के दौर में, लोगों में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण, सही–गलत की समझ भी नहीं रह गई। हर कोई अपनी अपनी महत्वाकांक्षा को लेकर समाज में बुरे संदेशों को फैला रहा है। चाहे राजनीति की बात ले, पहनावे की या लैंगिक संबंध के बारे में उनके रवैये की । हर मामले में पुराने लोगों को गलत बताया गया।

आज के दौर में घटते नैतिक मूल्यों के कारण –

आज के दौर में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण हो रहे अंजाम को देखकर तो कभी–कभी रोंगटे भी खड़े हो जाते है, जैसे – पैसों के कारण हत्या, चोरी, अपहरण और रेप (बलात्कार), माँ–बाप को घर से बाहर कर देना और उनकी पिटाई करना, निर्दोषों को जेल में देखना, भ्रष्टाचार, घूसखोरी इत्यादि। आज के दौर में नैतिक मूल्यों के घटने के कई कारण हैं, जो इस प्रकार हैं –

1. सामाजिक मीडिया का नैतिकता के मामले में ढील देना : अभिव्यक्ति या विचारों को प्रकट करने की स्वतंत्रता के दो माध्यम हैं – एक तो मीडिया (सामाजिक) और दूसरा व्यक्ति विशेष के विचारों का आदान प्रदान। जहाँ तक बात है, विचारों के आदान प्रदान की, तो विचारों का आदान–प्रदान मानव का व्यक्तिगत विकास करता है, जो प्राचीनकाल से चला आ रहा है। परंतु सामाजिक मीडिया पर विचारों की समीक्षा ठीक तरीके से नहीं होती, बल्कि नैतिकता के सारे रास्ते बंद भी किए जा सकते हैं।

2. शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों पर ध्यान न देना : आज की शिक्षा प्रणाली, महत्वाकांक्षा को बढ़ावा दे रही है, आज की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पढ़–लिखकर नौकरी करना और धन कमाना, चाहे धन कमाने का रास्ता ठीक हो या नहीं । यदि शिक्षा व्यवस्था में सचमुच सुधार लाना हो तो शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश जरूरी है। नैतिकता सोचने–समझने की शक्ति को भी प्रवर्धित करती है।

3. राजनीतिक व सामाजिक नीतियों का नैतिकता में समाहित होना और नैतिक मूल्यों को तोड़ना : निकोलो मैकियावेली के अनुसार – '' राजनीति का नैतिकता से कोई संबंध नहीं होता''। आज के दौर में राजनीति ने नैतिकता के सारे दरवाजे पर अपना भ्रष्टाचार का सिपाही तैनात कर रखा है । राजनैतिक नीतियाँ धीरे धीरे सामाजिक नीतियों को भ्रष्ट करती जा रही है। वास्तव में हमारा जीवन बहुत ही सरल है, लेकिन हम ही उसे नैतिकता की कमी से जटिल बनाते रहते हैं। नैतिक मूल्य मनुष्य का गुण है, इसलिए इसे सिर्फ मनुष्य में ही समाहित होना चाहिए।

4. अपनी संस्कृति और मातृ भाषा को स्वीकार न करना, बल्कि इसकी अवहेलना करना : डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के अनुसार

''जिस देश को अपनी संस्कृति व मातृ–भाषा को स्वीकार करने में गौरव का अनुभव ना हो, वह देश कभी उन्नति नहीं कर सकता''।

आज के दौर में लोग खुद की संस्कृति और सभ्यता को इसलिए स्वीकार नहीं करते या करना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें लगता है कि वो कुछ नया कर रहे हैं, जबकि वो कुछ भी नया नहीं कर रहे होते बल्कि देश और समाज के नैतिक मूल्यों को घटा रहे होते है। जो खुद को स्वीकार नहीं कर सकता वो दूसरों को कैसे स्वीकार कर पाएगा और इसी वजह से आज के दौर में लोग कुछ ज्यादा ही परेशान रहने लगे हैं।

आज के दौर में घटते नैतिक मूल्यों का निवारण : अर्थशास्त्र के जनक, महान 'अरस्तु' के अनुसार – ''नैतिकता के बारे में जानना ही पर्याप्त नहीं होता, इसे ग्रहण करना, अपनाना तथा स्वयं को अच्छा बनाने के लिए अन्य कोई भी कदम उठाना भी आवश्यक है''।

आज के दौर में घटते नैतिक मूल्य की समस्या के कुछ निवारण है, जो इस प्रकार है–

1. सामाजिक मीडिया पर नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का दबाव अथवा अनुमति देनी होगी ।

2. मनोरंजन कार्यक्रम (टी.वी., फिल्म, अखबार इत्यादि) पर अंकुश लगाना, जिससे वो कुछ भी ऐसा न दिखाये जिससे किसी भी देश के नौजवान बिगड़ जाए या बिगड़ने लगे क्योंकि वे आज के दौर में (चलचित्र, टी.वी., अखबार) साफ–साफ बताते है कि सुख–विलास ही सब कुछ है, इसे रोकना होगा।

3. अपनी संस्कृति व सभ्यता को खुशी–खुशी अर्थात गौरवपूर्वक स्वीकार करना होगा।

4. शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश करना जरूरी है, इसके लिये पाठ्यक्रम में महापुरूषों की जीवनी, उनकी गौरव गाथाओं का समावेश करना चाहिए। नैतिक मूल्यों से आज के दौर में नौजवानों को दिशा मिलेगी।

5. समाज को स्त्री और पुरूष के बीच अलगाववादी नजरिये को खत्म करना होगा, तथा स्त्री व पुरूष को एक दूसरे को सम्मान की नजरों से देखना होगा ।

6. जातिवाद, साम्प्रदायिकतावाद अथवा किसी एक धर्म के प्रति आग्रह जैसा भाव नहीं होना चाहिए।

7. लोगों को आध्यात्मिकता से जोड़ना होगा क्योंकि आध्यात्मिकता सत्य, विवेक, पवित्रता, ईमानदारी को जन्म देती है।

8. देश के सभी नागरिकों को शिष्टाचार, सदाचार, त्याग, मर्यादा और अनुशासन का पाठ पढ़ाना होगा।

9. राजनीति को नैतिकता भंग करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

10. बेकारी व असंतोष जैसी समस्याओं के बारे में सरकार को गहन विचार करना होगा क्योंकि बेकारी और असंतोष, नैतिकता के सबसे बड़े शत्रु हैं।

11. नैतिक मूल्य हमारे वंशज और पुरखों से विरासत में मिली धरोहर हैं, इसे स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं है।

12. माता–पिता को अपने बच्चों की बात सुननी चाहिए तथा बच्चों को अपने माता–पिता की खुशी को स्वीकार करना होगा तथा उनके द्वारा दिये गए सदाचार को सम्पूर्ण जीवन में लागू करना चाहिए।

उपसंहार – आज के दौर में नैतिकता का पतन होना सांसारिक समस्या बन चुकी है तथा सभी देश इस समस्या को गंभीरता से नहीं ले पा रहे है क्योंकि विज्ञान व आधुनिकता सभी को अपने–आप में समेट रही है, जिसके कारण संसार में आज लोग अशांति और भ्रष्टाचार की मार को झेल रहे हैं। हर तरफ हाहाकार मचा हुआ है। पश्चिमी सभ्यता तो इस कदर नैतिक मूल्यों का पतन कर चुकी है कि वहाँ रिश्तों का महत्त्व फीका पड़ने लगा है।

अत: संसार को नैतिकता के नैतिक मूल्यों पर ध्यान देना चाहिए, इससे पहले कि कहीं ये बीमारी लाईलाज बीमारी ना बन जाए।

❑❑❑

खेल के मैदान की आत्मकथा : आज की शिक्षा प्रणाली में खोता बचपन

श्री सचिन बालासाहेब गवली, भंडार विभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

मैं एक शहर के बीच में स्थित एक बड़ा मैदान हूँ। मेरा नाम इस शहर के नेता के नाम से है। मेरे चारों ओर बाड़ा लगा हुआ है और चारों किनारों पर अनेक प्रकार के छाया देने वाले पेड़ है। उन पेड़ों के नीचे बैठने के लिए बैंच बनाए हुए हैं। मेरे बगल में एक बगीचा हैं, उसमें कई प्रकार के रंग–बिरंगे फूल पौधे हैं। छोटे बच्चे उनके दादा–दादी, नाना–नानी के साथ उस बगीचे में शाम–सबेरे आते हैं।

मेरे पास विभिन्न उम्र के बच्चे, जवान और बुजुर्ग खेलने, कसरत करने तथा टहलने आते थे। यहाँ बच्चे साइकिल सीखने, क्रिकेट, फुटबॉल, दौड़ने और अनेक प्रकार के खेल खेलने आते थे। बारिश के मौसम में फुटबॉल खेलने में उन्हें ज्यादा आनंद आता था। एक बड़ा मैदान होने के कारण एक साथ कई सारे खेल खेलते थे। बुजुर्ग बैंच पर बैठकर उन खेलों का आनंद लेते थे और बच्चों का प्रोत्साहन बढ़ाते थे । मैं कई रोमांचकारी खेलों का गवाह रहा हूँ। जीतने वाला समूह जश्न मनाता और खिलाड़ी आनंदित होकर घर जाते थे। वहीं हारने वाला समूह मायूस न होकर अपनी गलतियाँ सुधारकर जीतने की उम्मीद से अपनी किस्मत आजमाने फिर आते थे। खेल के कारण बचपन में जिंदगी जीने का एक महत्त्वपूर्ण सबक सीखने मिलता है कि अगर शिद्दत से प्रयास करें तो सबकुछ मुमकिन है और उन्हें संभलते देख एक सुकून मिलता था।

खेलकूद और कसरत का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होते हैं। उससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है और तन–मन की शुद्धि होती है। पाठशाला की छुट्टियों में बच्चे दोपहर में भी खेलते थे लेकिन परीक्षा के दिनों में मैदान सुनसान रहता था। आजकल तो छुट्टियों में भी मेरे पास खेलने कोई नहीं आता। इस पीढ़ी के बच्चे सभी खेल कंप्यूटर पर खेलते है और मैदान में नहीं आते।

हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी है ''पढ़ोगे–लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोंगे –कूदोगे तो बनोगे खराब''। इस प्रणाली के कारण सभी बच्चों का बौद्धिक विकास तो हो रहा है लेकिन शारीरिक विकास नहीं हो रहा है। बच्चे सिर्फ पढ़ाई कर रहे है और अपने बचपन के मजे नहीं ले रहे है। इस कारण आज हमारे देश में स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं बढ़ गई है। बड़े समेत बच्चे भी गलत जीवनशैली अपनाने से बीमारियों के शिकार हो रहे है। सभी लोगों का शिक्षा और खेल के प्रति यही नजरिया है। जबकि विदेशों में मैदानी खेल, शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इस कारण वे नागरिक खेलों में हमसे ज्यादा पदक हासिल करते हैं। यह स्थिति बदलने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने की जरूरत है।

चलो, मेरी उम्र इतनी है कि मेरी भावनाएं खत्म नहीं होंगी । आज मेरे नजदीक के छोटे मैदानों की जगह ऊंची इमारतों ने ले ली है। अभी मेरे पास कम बच्चे खेलने आते है। डर लगता है कि मेरा अस्तित्व न मिट जाए, मगर एक खेल का मैदान होने से उम्मीद है कि यह नई पीढ़ी खेल का भरपूर आनंद लेगी।

मेरी एक इच्छा है कि मेरा नाम बदलकर मुझे खेल जगत की महान हस्ती के नाम से पहचाना जाए।

❑ ❑ ❑

भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्वसाधारण की भाषा होने के उपयुक्त है।– श्री शारदाचरण मित्र

पक्षी गायन - कुछ रोचक तथ्य

डॉ. पी. एस. भटनागर

संगीत प्रत्येक प्राणी के जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य, पशु, पक्षी, जल, थल सभी जगह रहने वाले जीवों के जीवन से जुड़ा है। भिन्न-भिन्न पक्षी भिन्न-भिन्न प्रकार की आवाजें निकालते हैं। पर सवाल यह उठता है कि वे गाना कहाँ से और कैसे सीखते है। हालाँकि पक्षी गाना सीखने का प्रशिक्षण नहीं लेते, लेकिन अधिकतर पक्षी ''कैसे और क्या गायें'' की प्रक्रिया से जरूर गुजरते हैं। कुछ पक्षी जन्म से ही पूरी स्वरावली लेकर पैदा होते हैं। जबकि कुछ पैदा होकर घोंसलों में रहकर किसी अन्य पक्षी

''हमें न अतीत पर कुढ़ना चाहिए और न ही हमें भविष्य के बारे में चिंतित होना चाहिए, विवेकी व्यक्ति केवल वर्तमान क्षण में ही जीते हैं।- चाणक्य

का गाना सुनकर वैसे ही स्वर निकालना सीख जाते हैं।

रोचक तथ्य यह है कि पक्षी गाना क्यों गाते हैं या मुंह से भांति–भांति की कर्ण प्रिय आवाज़ क्यों निकालते हैं? अलग–अलग चिड़ियाएं अलग–अलग कारणों से गाती या आवाज़े निकालती है। कुछ अपनी निर्धारित सीमा की रक्षा के लिए आवाज़े निकाल कर अन्य पक्षियों को सचेत करते हैं कि सावधान हमारी सीमा आरम्भ हो रही है। कुछ पक्षी केवल अन्य पक्षियों को दिखाने के लिए गाते हैं और अधिकतर पक्षी अपने साथी को रिझाने के लिए ही गाते हैं। अलग–अलग परिस्थितियों में पक्षी अलग–अलग आवाज़े निकालते हैं।

नर कोयल एक जैसा तेज़ कूह–कूह का स्वर निकालता हैं। कोयल की यह मीठी आवाज़ भारतीय ग्रीष्म ऋतु का आकर्षण है। मादा कोयल केवल की–की–की ही धीमे–धीमे आवाज़ निकालती है। नर कोयल मादा कोयल को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मधुर आवाज़ निकालता है।

सफेद तीतर घंटी बजने जैसी ऊँची तेज आवाज़ में कतीतर–कतीतर या पतीला–पतीला, जल्दी–जल्दी बोलता है और इसकी आवाज़ सारे साल सुनी जा सकती है।

White Breasted Kingfisher (किलकिला) उड़ते हुए एक तेज़ कुडकुड की सी आवाज़, साथ ही संगीतमय, जल्दी–जल्दी दोहराया जाने वाला बातचीत जैसा गीत गाती है।

Pied Kingfisher या कोयराला उड़ान भरते हुए खुशनुमा चीरक–चीरक गीत के रूप में निकालती है।

मोर बहुत ही सुन्दर पक्षी है और वर्षा के आगमन का सूचक है। वर्षा ऋतु में इसे अक्सर पंख फैलाकर नाचते हुए देखा जा सकता है। नाचते हुए यह मुंह से 'पीहू–पीहू' जैसी आवाजें निकालता है जो बहुत दूर तक वातावरण को संगीतमय बना देती है। नर मादा को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए झूम झूम कर नाचता और गाता है। मादा न तो नाचती है और न ही गाती है।

ब्रश आकार में एक छोटी सी चिड़िया है। हिमालय पर भारत और चीन दोनों ओर पाई जाती है। विभिन्न प्रकार और स्वरों में गाना गाती है। सम्मोहित करने वाला गीत कभी ऊंचे कभी धीमे स्वर में गाती है। यह विश्व भर में विभिन्न प्रजातियों के रूप में पाई जाती है।

टीक्लेस ब्लू फ्लाई कैचर कभी भी स्थिर नहीं रहती। स्पेरों के आकार की यह चिड़िया खनखनाता हुआ मधुर गीत गाती है। गीत ही इसकी उपस्थिती का आभास कराता है।

रेड वेंटेड बुलबुल गोरैय्या से जरा बड़ी तथा बहुत ही सुंदर पक्षी है। इसकी बहुत ही मधुर और मन को लुभाने वाले गीत के कारण ही इसे भारतीय नाईटिन्गेल कहते हैं। वैसे भारत में नाइटिन्गेल नहीं पाई जाती।

कौओं की काँव–काँव से कौन परिचित नहीं है। हर जगह, हर मौसम में इसका कर्ण कटु आवाज़ में गाया हुआ गाना सुना जा सकता है। कभी जल्दी–जल्दी कभी धीरे–धीरे गाना गाने का इसका कोई प्रयोजन नहीं होता। वैसे इसकी काँव–काँव से कई किंवदंतियां जुड़ी हैं।

शेर दहाड़ता है तो हम समझ जाते हैं कि यह अपने गले से आवाज़ निकाल रहा है, इसी प्रकार कुत्ता, बिल्ली तथा अन्य जानवर भी अपने गले से आवाजे निकालते हैं। प्रश्न यह उठता है कि पक्षी या जानवर यह मधुर, तीखी व सुरीली आवाज़ कहाँ से निकालते हैं? इन सभी के गले में बक्से–नुमा अंग होता है। सिरिंक्स–जिससे अलग–अलग प्रकार से आवाज़ निकाल कर–लगातार गाकर उसे गीत का रूप देते हैं। कभी अपनी बोली का इसी अंग से वह कभी तेज़, कभी धीमी और कभी ऊंची तो कभी नीची स्वर लहरी निकाल कर अपने गीत को नए नए रूप देते है। आवाज़ मीठी हो, संगीतमय हो या फिर कर्कश यह पक्षी के आस पास के वातावरण पर निर्भर करता है। जैसे घने बादल छायें हों और शीतल बयार चलने पर मोर अत्यंत मीठी बोली बोलकर मोरनी को अपनी ओर आकर्षित करता है। कोयल भी घने आम के वृक्षों में छिपकर अपनी मीठी बोली से वातावरण को सराबोर कर देती है।

पक्षी संगीत मानव को भी लुभाता है और हमारे जीवन में मधुरता घोलने के साथ–साथ संगीत में विभिन्नता का बोध कराता है। पक्षियों का संरक्षण करें इसके लिए हमें हमेशा प्रयासरत रहना चाहिए।

❑❑❑

''सफलता के उच्चतम बिन्दु पर पहुचना है तो संगठन बनाकर सामूहिक रूप से काम करना होगा।''– स्वामी विवेकानन्द

मौत से परे

डॉ. चन्दना रायबर्धन, सेवानिवृत्त स्टाफ, एनसीएल, पुणे

रात के बारह बजे का समय था, मैं बिस्तर पर लेटे लेटे कुछ अस्वस्थ सा महसूस कर रही थी, फिर भी निंद्रा देवी ने आकर हल्की थपकी दी, और मैं सो गई। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई ''अरे यह कौन आ गया'' कहकर मैं अपने शरीर को ढकेलते हुए दरवाजे तक पहुँची। पूछा कौन? बाहर से आवाज आई–'मैं मौत, तुम्हें लेने आई हूँ''। अरे यह क्या बेतुकी बात हो गई, मौत और मेरे घर!!! मैंने आएं देखा न बाएं, बिना देखे ही दरवाजा खोल दिया। मौत घुस गई। वीभत्स सा उसका चेहरा था, पर एक अजीब सी स्निग्धता थी, जो मुझे बरबस उसकी ओर आकर्षित कर रही थी। मैंने कहा लंबे सफर से आ रही हो थोड़ी देर विश्राम कर लो। टेढ़ी नजर से मेरे अंदर तक झांकते हुए उसने कहा समय व्यर्थ न करो, चलो मेरे साथ।

''चलो मेरे साथ। यह क्या बात हुई... अभी तो नई साड़ी का फॉल पिकू भी नहीं हुआ, ई स्क्वेयर में जाकर बाहुबली न देखा, थोड़ी शॉपिंग भी बाकी है। एन.सी.एल. का एक चक्कर भी मारना है। बम्बई जाकर अपनी पोती की हरकतों पर जोर जोर से हँसना है। हिन्दी पर कई काम करने हैं समाज के उल्टे सीधे नियमों का उल्लंघन करना है। ऐसे कैसे चल दूँ!!! लेकिन नहीं, मौत का हुक्म फरमान हुआ ''जिन कपड़ों में हो वैसे ही चलो''।

मैं चल पड़ी, मौत ने घर पर ताला मारने का अवसर भी नहीं दिया। पहाड़ पर्वतों की मीलों दूरी तय करने पर एक जगह जाकर मौत रूक गई। ऊपर से पृथ्वी कितनी स्वच्छ और निर्मल लग रही थी। सर्वदा रोज की रेलमपेल में रास्तें जैसे अपना ही रास्ता भूल जाते। दुनिया जैसे भाग–भाग कर कहाँ पहुँचेगी, समझना मुश्किल होता। हर जगह दुःख, भग्नाशा और मारकाट। फिर भी मौत से मैंने कहा ''मुझे एक बार घर जाने दो, मैं बेटी को कुछ कहकर नहीं आई, पौधों को पानी तक नहीं दिया, पड़ोसिन की कटोरी भी वापस करनी है, यह भी नहीं देखा कि गीजर ठीक से बंद किया या नहीं'। मौत को मुझ पर दया आई, कहा ''जाओ परन्तु समय पर लौट आना''।

आनन–फानन में मैं घर पहुँच गई। अरे! यह क्या? मेरे घर में इतनी भीड़ क्यो? मुझे ही धक्का मारकर किसी ने पीछे कर दिया। जैसे–तैसे अंदर पहुँची, देखा मेरी बेटी दहाड़ मारकर रो रही थी। मैंने उसके आँसू पोंछने की कोशिश की, परन्तु हाथों ने जैसे सत्याग्रह कर दिया। पोती के चेहरे पर हजार सवाल थे। भागकर रसोई में गई, वहाँ भी औरतों का जमघट लगा था। मुझे बहुत चिन्ता हो रही थी कि बच्चों ने कुछ खाया कि नहीं। इतने में ही पड़ोसिन ने फ्रिज खोला और धड़ाम से बंद किया। मैंने कहा ''आहिस्ते भाई''। लोग आ जा रहे थे। किसी ने बालकनी के गमलों को ठोकर मारी। गमला रो पड़ा। अरे भाई, मानती हूँ तुम्हें मेरे गमलों से शिकायत थी क्योंकि उनसे पानी रिस रिस कर तुम्हारी बालकनी को भिगो देता था, पर उनमें भी जान है यह कब समझ में आयेगा? कुछ महिलाएँ रो रही थी, पर ऐसा लग रहा था जैसे मगरमच्छ के आँसू हों। एक ने कहा ''घमंड तो उसमें कूट कूट कर भरा था''। 'नहीं भाई ऐसा नहीं है, मैं अपनी ही दुनिया में खोई रहती थी'– मैं

दुःख से बोल पड़ी, पर किसी ने ना सुना। ड्राइवर की नजरों में गहरी उदासी थी। सामने वाली राधा ताई जिसे मैं कभी मुँह नहीं लगाती थी, भाग भाग कर सबको पानी पिला रही थी। कोने में जाकर आँचल से आँसू भी पोंछ लेती थी। उसे देखकर मुझे अपने व्यवहार पर बहुत पछतावा हो रहा था।

एन.सी.एल. के असंख्य मेरे दोस्त आए हुए थे। उनमें एक गहरी विषाद की रेखा दिखाई दे रही थी। अरे! एक सज्जन जो हजार बुलाने पर भी मेरे घर नहीं आए आज फूट-फूट कर रो रहे थे। मेरी बेटी को उसकी मौसी कह रही थी ''तेरी माँ ने कुछ वसीयत वगैरह बनाई कि नहीं? मैं हैरान थी, यहाँ उस पर पहाड़ टूट पड़ा है और लोगों को वसीयत की पड़ी है। फिर वक्त की नजाकत को समझते हुए मैं अलमारी की ओर भागी। खोलते-खोलते हैंडल ही हाथ में आ गया। तड़ाक की आवाज... अलमारी खुली, कई लोग लपके, मैंने बेटी को कहा ''उठ'', पर वह तो टस से मस न हुई। कई लोग बेटी को प्रश्नभरी नजरों से देख रहे थे। मेरी चिन्ता अपनी पराकाष्ठा पर थी, पर बेटी उठी... अलमारी बंद! मेरी चिन्ता का अंत हुआ। बाहर के कमरे में आकर देखा, एक पड़ोसी सोफे पर पैर पसारे बैठा है। मैंने कहा ''अरे एक दिन पहले ही डस्टिंग की है जरा तो सोचो''। जमाता ने आकर बेटी को अपनी बाहों में ले लिया। शांत होकर उसे समझा रहा था। उसके चेहरे पर गहरे दुःख की छाया ने मेरे हृदय को झकजोर दिया। अहा! मौत तेरा धन्यवाद, वरना यह दृश्य मैं कैसे देख पाती।

मेरे तबले और संगीत के अन्य साजों-सामान पर पड़ोस के लड़कों में बहस छिड़ गई कि अब इनका क्या होगा?''अरे! यह जान है मेरी, इसे छूना भी मत''- मैं चीखी।

कई लोग मेरे घर की सजावट को प्रशंसा भरी नजरों से देख रहे थे। अचानक ही उन्हें याद आया कि रोना भी है, तो दहाड़ मार कर रोने लगे। कोई मेरी सफलता की चर्चा कर रहा था तो कोई असफलता की। मुझे मौत का एहसान मानना पड़ा, वरना कैसे जान पाती सबके मन की बात।

अचानक देखा एक कमरे में मद्धम रौशनी में, मेरी देह पड़ी हुई थी। मेरी फोटो पर माला चढ़ी हुई थी। मेरा धोबी प्रश्न चिन्ह लिए खड़ा था... उसके पैसे जो बाकी थे। मैंने पुकार कर कहा ''अरे! यह फोटो क्यों रखा है, वह फोटो रखो जिसमें मैंने नीली साड़ी पहनी थी''। पर मेरी कौन सुनता? हरि बोल की ध्वनि के साथ मेरी देह चार कंधों पर सवार होने वाली ही थी कि बेटी दहाड़ कर बोली, ''मेरी माँ की अन्तिम इच्छा पूरी होने दो, यह शरीर मेडिकल कॉलेज या अस्पताल में जायेगा''। सुनकर कलेजे को ठंडक पड़ गई। जीते जी तो बहुत लोगों के काम आई, अब मौत ने यह भी करके दिखा दिया। धन्यवाद मौत!

अचानक मौत ने फिर से फरमान जारी किया ''टाइम आऊट''। थकी हारी मैं अन्तिम विदा के लिए घर लौटी। दुःख था अब फिर न बैठकर बेटी के साथ गप्पे मार सकूँगी, शाम के धुंधलके में बालकनी में बैठकर चाय की चुस्की लेते हुए डूबते सूरज को न निहार पाऊँगी। मेरे सपनों का महल मेरे हाथों से छूटा जा रहा था। घर के सामान पर सफेद चादरें डाली जा रही थी। गमले चिल्ला चिल्ला कर पूछ रहे थे, ''हमें पानी कौन देगा''? सोफे का कोना कह रहा था ''मुझे साँस लेने दो''। मेरा फोन निशब्द पड़ा था। मौत का यह तमाशा अब न देखा गया। भारी कदमों से मैं चल पड़ी, पर न जाने कहाँ!!!

❑❑❑

झूठे शब्द सिर्फ खुद में बुरे नहीं होते, बल्कि वो आपकी आत्मा को भी संक्रमित कर देते हैं। अतः झूठ बोलने की आदत से सदा दूर रहना चाहिए।- (सुकरात)

अजब मध्यप्रदेश की गजब यात्रा

श्रीमती कल्पना तलाटी, लेखा अनुभाग, एनसीएल, पुणे

बहुत वर्षों से मध्यप्रदेश की यात्रा करने की इच्छा हो रही थी। ऑफिस में हम कुल 9 सहकर्मियों ने मिल कर आखिर योजना बना ही ली और दिसंबर 2016 में क्रिसमस की छुट्टी के साथ 4 छुट्टियां लेकर मध्यप्रदेश घूमने के लिए पुणे से जबलपुर तक की टिकिट्स करवा ली। टिकिट्स वेटिंग में मिली थी, इसलिए बड़ी उलझन थी कि आरक्षण कन्फर्म मिलेगा कि नहीं। फिर भी सब अपने अपने हिसाब से तैयारियां कर रहे थे और मन में एक उत्साह सा था।

आखिर जाने का दिन आ गया, लेकिन हमारे ग्रुप के सिर्फ 6 ही लोगों को कनफर्म सीट मिली और बाकी का वेटिंग ही था। यह जानकर हमें बड़ी मायूसी हुई और हम बड़ी उलझन में आ गए कि अब क्या किया जाए। खैर, फिर सोचा जितने लोगों की सीट कनफर्म हुई है उतने ही घूमने जाएंगे। इस तरह हम छः लोग दिनांक 23 दिसंबर, 2016 को पुणे से जबलपुर के लिए निकल पड़े।

जबलपुर – अगले दिन हम जबलपुर पहुंचे और सबसे पहले जबलपुर घूमने का तय किया। जबलपुर मध्य प्रदेश के कुछ मुख्य शहरों में से एक है जिसे हम सांस्कृतिक शहर के नाम से भी जानते हैं। यह शहर कुछ मुख्य पर्यटन स्थानों के लिए प्रसिद्ध है जैसे भेड़ाघाट, शिव मूर्ति और 64 योगिनी मंदिर इत्यादि। स्टेशन से सीधे होटल जाकर फ्रेश हो कर खा पीकर जब हम भेड़ाघाट पहुंचे तो पता चला कि वहां तो नाव वालों की हड़ताल है। हमारी तरह बहुत से लोग वहां नाव की सवारी के लिए आए थे, किंतु नाव न चलने के कारण निराश थे।

हमने सोचा कि इतनी दूर आए हैं तो घूमकर ही जाएंगे। मैंने 5-6 नाव वालों से बात की, वे लोग अपनी समस्याएं बता रहे थे और ले जाने के लिए राजी नहीं थे, फिर उनके मुखिया से बात की और कहा कि हम इतनी दूर से आए है और नाव की सवारी के बिना तो अच्छे से भेड़ाघाट घूमना नहीं हो पाएगा, हमें निराश मत करो। यह सुन कर वह मान गया और हमें कहा कि आप थोड़ी ज्यादा कीमत यदि देने को तैयार है तो मैं आपको एक नाव पर भेज देता हूं। हम लोग तैयार हो गये और नाव की सवारी का आनंद लिया। हमारी देखादेखी और भी पर्यटक वहां आ गए और इस तरह वहां 5-6 नावें चलने को तैयार हो गई।

नर्मदा नदी पर स्थित भेड़ाघाट सचमुच में बहुत सुंदर स्थान है। यहां का मुख्य आकर्षण बंदर कुदनी और मार्बल रॉक्स है, जो देखते ही देखते मन को मोह लेते हैं। चंद्रमा की चांदनी में यह

संसार में वो सबसे ज्यादा धनवान है जो अपने पास जीवनपयोगी सामग्री कम से कम होने पर भी संतुष्ट है, क्योंकि संतुष्टि ही प्रकृति की सबसे बडी दौलत है।– (सुकरात)

मार्बल रॉक्स नदी में नदी पर एक बहुत ही सुंदर आकृति बनाते हैं। जो देखते ही बनती है। जबलपुर संगमरमर पत्थर के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है जो भेड़ाघाट में पाया जाता है। इस संगमरमर का उपयोग आभूषण, मूर्ति और साज सज्जा की वस्तु बनाने में इस्तेमाल होता है और यहां से संगमरमर पूरे भारत में भेजा जाता है। यहां

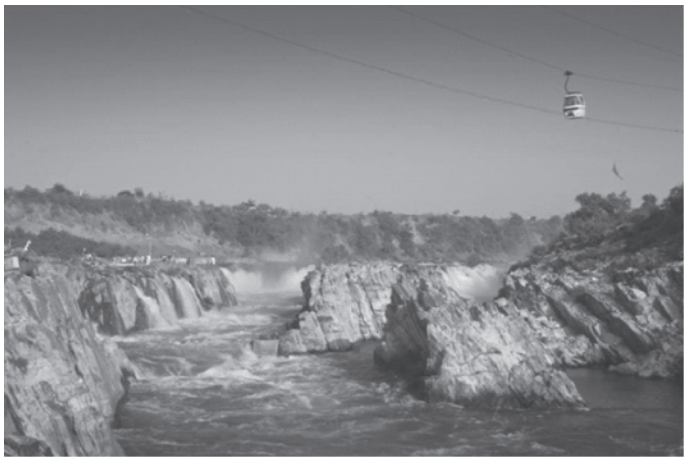

किनारे पर बहुत सी दूकाने लगी हुई थी, जिनमें संगमरमर का सामान मिल रहा था। नाव से उतरने के बाद हमने धुआंधार प्रपात देखा। यह एक बहुत ही सुंदर और बड़ा जलप्रपात है जो नर्मदा नदी पर भेड़ाघाट में स्थित है। पानी का इतनी ऊंचाई से गिर कर धुंए का निर्माण होता है, जिसे धुआंधार कहते हैं।

भेड़ाघाट घूमने के बाद हम लोग चौसठ योगिनी मंदिर गए। चौसठ योगिनी मंदिर मध्यप्रदेश के जबलपुर में स्थित मुख्य पर्यटन स्थानों में से एक है। यह मंदिर बहुत ही पुराना मंदिर है, यहां दुर्गा जी 64 योगिनी के रूप में विराजमान हैं। इस मंदिर के बीचों–बीच भगवान शिव का मंदिर स्थापित है। यह मंदिर ऊंचाई पर स्थित है जहां 150 से ज्यादा सीढ़ियां है, यहां 64 योगिनी की मूर्तियां वृत्ताकार रूप में स्थित है।

इसके बाद हम लोग मदन किला घूमने के लिए गए। मदन किला जबलपुर का इतिहास बताता प्राचीन स्मारक है। यह किला राजा मदन सिंह द्वारा बनवाया गया था जो कि शहर से दूर एक पहाड़ी पर स्थित है। यह किला रानी दुर्गावती से भी जुड़ा हुआ है। किला घूमकर हम लोग वापस होटल आए और भोजन खा–पी कर चित्रकूट के लिए रात की ट्रेन पकड़ ली।

चित्रकूट – अगले दिन सुबह हम लोग चित्रकूट में थे। सबसे पहले एक अच्छे होटल की तलाश की और वहां जाकर थोड़ी देर आराम किया, फिर स्नान इत्यादि करके सुबह दस बजे हम चित्रकूट घूमने के लिए तैयार हो गए। चित्रकूट धाम मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में एक है। चित्रकूट मध्यप्रदेश की सीमा से एकदम जुड़ा हुआ है। उत्तरप्रदेश में बसा हुआ शांत और सुन्दर चित्रकूट प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है। माना जाता है कि भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के चौदह वर्षो में ग्यारह वर्ष चित्रकूट में ही बिताए थे। इसी स्थान पर ऋषि अत्रि और सती अनसुइया ने ध्यान लगाया था। ऐसा भी कहा जाता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने चित्रकूट में ही सती अनसुइया के घर जन्म लिया था।

चित्रकूट में हमने श्री वाल्मीकि आश्रम, गणेश बाग, कोटि तीर्थ, देवांगना, सीता रसोई, हनुमान धारा, राघव प्रयाग, रामघाट, जानकी कुण्ड, भरत मिलाप, स्पटिक शिला एवं श्री कामदगिरी इत्यादि पवित्र स्थानों के दर्शन किए। इस स्थान में सन्तों के अनेक आश्रम बने हुये हैं, जिनमें दीन, हीन, अपंग अपाहिज व्यक्तियों की सेवा होती है। चित्रकूट के दर्शनीय स्थानों के दर्शन लेने के बाद देर रात हम लोग होटल पहुंचे और रात्रि विश्राम किया। अगले दिन हमारा सतना जाने का प्रोग्राम था।

बांधवगढ़ नेशनल पार्क – अगले दिन सतना पहुँच कर वहां से उमरिया पहुंचे, जहां से बांधवगढ़ नेशनल पार्क पहुंचे। बांधवगढ़

नेशनल पार्क एकदम घना और सुंदर जंगल है, जहां हमने सफारी में जंगली जानवरों को देखने का मजा उठाया। यहां शेर बहुत अधिक संख्या में पाये जाते है। इसके बाद अगले दिन मैहर जाने का योजना बनाई।

मैहर – मध्य प्रदेश के सतना जिले में 1063 सीढ़ियां लांघ कर भक्त माता के दर्शन करने जाते हैं। सतना जिले की मैहर तहसील के पास पर्वत पर स्थित माता के इस मंदिर को मैहर देवी का मंदिर कहा जाता है। मैहर का मतलब है मां का हार। मैहर नगरी से 5 किलोमीटर दूर त्रिकूट पर्वत पर माता शारदा देवी का वास है। पर्वत की चोटी के मध्य में ही शारदा माता का मंदिर है।

इस मंदिर से अल्हा और उदल, जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध किया था, का नाम जुड़ा हुआ है। कहते है कि वे माता शारदा के बड़े भक्त हुआ करते थे। इन दोनों ने ही सबसे पहले जंगलों के बीच मैहर मंदिर की खोज की थी जहाँ माता विराजमान है। इसके बाद आल्हा ने इस मंदिर में 12 सालों तक तपस्या कर देवी को प्रसन्न किया था। माता ने उन्हें अमरत्व का आशीर्वाद दिया था। आज भी यही मान्यता है कि माता शारदा के दर्शन हर दिन सबसे पहले आल्हा और उदल ही करते हैं। मंदिर के पीछे पहाड़ों के नीचे एक तालाब है, जिसे आल्हा तालाब कहा जाता है। यही नहीं, तालाब से 2 किलोमीटर और आगे जाने पर एक अखाड़ा मिलता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यहां आल्हा और उदल कुश्ती लड़ा करते थे।

मंदिर में हम लोग सीढ़ियां चढ़ कर गए। माता के दर्शनों का मन में बहुत उत्साह था, दर्शन करते ही लगा कि मन आनंद से भर गया हो। दोपहर तक दर्शन कर के वापस आए और भोजन करके होटल में विश्राम किया।

पन्ना – इसके बाद हम पन्ना गए। पन्ना मध्यप्रदेश का एक ऐतिहासिक नगर है। पन्ना में हमने संगमरमर के गुंबद वाला स्वामी प्राणनाथ मंदिर (17 वीं शताब्दी में बनाया गया) और श्री बलदेवजी मंदिर में दर्शन किए। पन्ना में पद्मावती देवी का एक मंदिर है, जो उत्तर–पश्चिम में स्थित पौराणिक किल–किला नदी के पास आज भी स्थित है। इसके अलावा महाराज छत्रसाल का पुराना महल भी देखा, जो आज भी खण्डहर रूप में विद्यमान है।

खजुराहो – हमारा अगला दर्शनीय स्थान था खजुराहो। मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो का इतिहास काफी पुराना है। खजुराहो इसलिए पड़ा क्योंकि यहां खजूर के पेड़ों का विशाल बगीचा था। खजुराहो विश्व प्रसिद्ध जगह है, यहां बहुत से मंदिर है, जिनमें विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां है। पूरा दिन खजुराहो घूमने के बाद हमारा मन प्रसन्न हो गया।

अमरकंटक – अमरकंटक एक छोटा सा गाँव है, शायद मध्य प्रदेश का सबसे ठंडा गाँव। रहने के लिए बड़े से बड़ा होटल, सराय, सब मिल जाएगा। अमरकंटक में नर्मदा नदी अपने बाल रूप में है, जबलपुर पहुँचते पहुँचते ये नदी इतनी बड़ी हो जाती है कि उसके पानी से धुआंधार प्रपात बनता है।

अमरकंटक के आस पास कई मंदिर हैं, जो कि देखने योग्य हैं। यहाँ जगतगुरू शंकराचार्य द्वारा स्थापित पातालेश्वर महाशिव मंदिर, कर्ण मंदिर और एक पुरातन काल का सूर्य कुंड है। ये सब मंदिर नागर शैली में बनाये गए हैं और इनका मंडप एक पिरामिड के आकार का है। अपनी यात्रा के आखिर दिन हमने अमरकंटक घूमा।

अमरकंटक घूम कर हम लोग 30 तारीख को वापस पुणे के लिए रवाना हुए और 31 दिसंबर को सुबह पुणे पहुंच गए। मन में एम.पी. के सुंदर स्थानों की याद बाकी थी।

❑❑❑

''क्यों''

श्री जयसिंह यादव, वरिष्ठ शोध छात्र,
सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

ना जाने क्यों, डर लगता है,
राह में कहीं, खो जाने का मन करता है।।
अन्धेरा नहीं, रोशनी है। जो परेशान करती है।
ना जाने, किस आसमाँ में, खुद को पाने का मन करता है।
अंजानी सी राह में, कहीं खो जाने का मन करता है।
ना जाने क्यों डर लगता है।.....
कहते है, जिन्दगी इक इत्तेफाक है,
तो ना जाने क्यों... बहते है, हम, हार–जीत के इस संगम में।
तमन्ना है, किनारों के तलाश की, पर क्यों,
लहरों में बहने का मन करता है।
जिन्दगी के बढ़ते इस तूफान में,
कहीं खो जाने का मन करता है।
ना जाने क्यों, डर लगता है।.....
ऐ रब मेरा, कुसूर तो बता, क्यों इतनी नफरत है, तुझे मुझसे।
जानकर भी अंजान है। तू क्यों मेरी ख्वाहिशों से।
अर्जी है मेरी, इस जहां मे उड़ने की।
मर्जी है मेरी, इस नीले आसमां को ढूंढने की,
फिर क्यूँ, ना जाने क्यों, गिर जाने से डर लगता है।
ना जाने क्यों, डर लगता है।
अंजानी सी राह में कहीं खो जाने का मन करता है।

सूरज

डॉ. एच. वी. आदिकाने, वैज्ञानिक, रासा. अभि. विभाग,
सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

यूँ बिखरा के जुल्फें
शाम न कर,
मैं सूरज हूँ
ढल जाऊँगा।
यूँ मेरा अक्स
लहरों पर न बहा
मैं सिन्दूर हूँ
तेरे माथे का
बह जाऊँगा।
समेटना है मुझे
तो अपनी बांहों में
समेट लों,
मैं रेत हूँ
मुट्ठी से फिसल जाऊँगा ।
दूर किनारे से मेरे डूबने का
तमाशा न देख
आ, तू भी डूब जा
मैं तेरी रात का
चाँद बन जाऊँगा ।
मेरे वीरानों को
सितारों की तलाश है,
तुम लहरा दो अपना आँचल
मैं आसमाँ बन जाऊँगा।।

''सोचना आसान होता है। कर्म करना कठिन होता है, लेकिन दुनिया में सबसे कठिन कार्य अपनी सोच के अनुसार काम करना होता है।'' गोएथ

मेरी दो कविताएं

चलना जीवन का सार सखे।

उत्तुंग पर्वतीय–श्रृंगों से जब नदी निकलकर बहती है,
पथ के अगणित अवरोधों से टकराती कल–कल कहती है।
अपनी वेग प्रबलता से दे उड़ा विघ्न पथ पार सखे।
चलना जीवन का सार सखे।

सूर्यप्रभा कर पार अनंत नभ जब अवनी पर पड़ती है,
फैला जगमग उज्ज्वलता को मुस्काती पल–पल कहती है।
अपनी तेज प्रज्ज्वलता से कर जगती का उपकार सखे।
चलना जीवन का सार सखे।

सागर का संचय समेट जब हवा सुहानी चलती है,
अपने रिमझिम झनकारे से आतुर संदेशा कहती है।
यह गति उदारतम ईश्वर का है सृष्टि को उपहार सखे।
चलना जीवन का सार सखे।

अपनी कक्षा में सब हैं चलते पृथ्वी चन्द्र सितारे भी,
गतिरत रहते सभी पदार्थकण अणुओं के घटकारे भी।
चलने में रहती बद्ध है उर्जा व वैश्विक विस्तार सखे।
चलना जीवन का सार सखे।

कहां ढूंढू तुम्हे साजन?

पुकारों ने कोलाहल की, हवाओं में मची हलचल,
निगाहों में विवश इच्छा, विचारों में अधीर खलबल,
तुम्हारे दरस पिपासा में उदासा है मनःदर्पण,
कहां ढूंढू तुम्हें साजन?

दिवा देखा, निशा देखि, गगन देखा, दिशा देखि,
तुम्हारा रूप ना देखा, नहीं कोई निशां देखि,
दृगों पर मेघ छाए हैं, दुखों का झर रहा सावन,
कहां ढूंढू तुम्हें साजन?

धरा ने ओढ़ रखी है हमारे दर्द की चादर,
जलद ने और छलका दी हमारे आँख की गागर,
खगों ने चंचु खोले हैं, रूदन में कर रहे गायन,
कहां ढूंढू तुम्हें साजन?

अहा! मौसम बदल आया, बहारें भू पर छाई हैं,
छिपी पत्तों के झुरमुट में कली फिर मुस्कुराई है,
अलि उन्मत हुआ देखो कमल पर कर रहा गुंजन,
कहां ढूंढू तुम्हें साजन?

हुई हो दृष्टि से ऐसे, हमारे आज तुम ओझिल,
बदन में आह उमड़ी है, मानस भी हो गया बोझिल,
हृदय में फिर जगह दे दो सहन के पार है क्रंदन,
कहां ढूंढू तुम्हें साजन?

श्री मृत्युंजय तिवारी
भौतिक एवं पदार्थ रसायन प्रभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

''यदि आप बार–बार असफल नहीं हो रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आप कुछ नया नहीं कर रहे हैं।'' वुडी एलन

जन्म मृत्यु

हर एक मृत्यु की वार्ता सुनकर
मैं ही चिता में जलती हूं
मन ही मन मृत्यु पश्चात् यात्रा के
बारे में सोचने लगती हूं ,
जिंदगी जैसे रूक जाती है, सांस मानों थम जाती है
मैं कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध हो जाती हूं
जन्म मृत्यु के रहस्य की गहरी सोच में डूब जाती हूं ।।
जिंदगी फिर से शुरू होती है
अपनी गति से चल पड़ती है
एक दिन अचानक
मृत्यु की वार्ता आ धमकती है
मैं फिर चिता में जलती हूं
जिंदगी जैसे रूक जाती है,
सांस मानो थम जाती है
मैं कुछ क्षणों के लिए फिर स्तब्ध हो जाती हूं ।।
जन्म मृत्यु के फेरे में और कितनी बार पिसना होगा
इस गहरी सोच में डूब जाती हूं
ना सुलझे हुए मृत्यु के रहस्य की तरह।

आसमान की डोली

जमने लगी है सांझ जैसे मन में
धीरे धीरे पलकें झुकाए
लगी है मानो रात पिघलने
टिमटिमातें तारों की
होने लगी बरसात जमीं पर
झूमने लगी है भीगी हुई चांद की छवि
हलकी हलकी झील की लहरों पर
सन्नाटा सा छा रहा है चारों दिशा में
और सृष्टि सो रही है गहरी नींद में
नादब्रह्म तब ले जा रहे है किसे
इस जगत के पार जन्म–मृत्यु से परे
सुनाते एक अनोखी अद्भुत धुन
बिठाए असमान की डोली में।

सुश्री सुनीता ठोंबरे
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

मन मौजी हूँ।
कुछ भी लिख देता हूँ।

श्री सुभाष चन्द्र मिश्रा, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

मैं कोई कवि नहीं जो कविता लिखता रहता हूँ
मैं तो बस यूँ लिख देता हूँ ....
जिंदगी में जब कभी उदास होता हूँ तो
इस प्रकार की कविता लिखकर रक्त चाप कम कर लेता हूँ।
हँस हँस कर जीवन जी लेता हूँ,
मैं तो बस यूं ही कुछ लिख देता हूँ।
मैं कहां कविता लिखता हूं,
मैं तो बस यूं ही लिख देता हूं,
दिल की कोख से पैदा हुए,
कुछ ख्यालों को शब्दों का लिबास,
पहनाने के लिये,
शब्दों का लिबास ओढ़े,
उड़ जाते हैं वो ख्याल,
आकाश में पक्षियों की तरह,
या फिर मस्त बादलों की तरह,
इस प्रयास में कि कभी,
किसी के दिल के तारों को छेड़ पायेंगे,
कभी किसी कें होठों पे,
फैल जायेंगे मुस्कुराहट बन कर
मैं तो बस यूं ही लिख देता हूं
वो मुस्कुराहट देखने के लिये
आँख नम हो जाए मन हल्का हो जाए
कोई हमें समझे किसी को हम समझे तो बात बन जाए।
आलोक में अपनी कविता छप जाए
तो मन को सुकून मिल जाए।

(मेरी एक छोटी सी घुमक्कड़ टीम है
उसे यह कविता समर्पित है।)

सहकर्मी

श्री मोहन ब. सूर्यवंशी, क्रय विभाग,
सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

वो कौन होता है, सबेरे मिलता है।
शाम को बिछड़ता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, खुद सीखता है
आपको सिखाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, खुशी में मुस्कुराता है,
दुःख में सहलाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है कान पकड़ता है,
अफसर से बचाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, नाराज होता है,
मान भी जाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, हाथ बंटाता है,
साथ निभाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, चुपके से जिंदगी में आता है,
आपकी जिंदगी बन जाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

वो कौन होता है, निवृत्त होता है तो खुद रोता है,
आपको भी रूलाता है, हाँ वो सहकर्मी होता है।

आपकी प्रतिक्रिया

आपकी प्रतिक्रिया

आपकी पत्रिका 'एनसीएल आलोक' के 20 वें अंक की प्राप्ति हुई। इस अंक के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें। **बधाई** : पत्रिका 'एन.सी.एल. अलोक' के 20 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु। **प्रशंसनीय** : पत्रिका में डॉ. ओमकार सिंह कुशवाहा, डॉ. अनिल लचके, श्री. सुरेश चिपलूनकर, डॉ. संजय जाधव, सुश्री नीतू बघेल, डॉ. एम.एल. गुप्ता, ले. पराग चिटनवीस, श्री. सुभाषचंद्र मिश्र, श्री. राजेश कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती गीतिका द्विवेदी, श्री. विवेक जैन एवं डॉ. जयप्रकाश की रचनाएं। **आकर्षक** : पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं विविध आयोजनों के प्रभावशाली छायाचित्र। **विशेष** : वर्तमान के अस्तित्वविरोधी जल–समस्या जैसी कठिनाइयों की ओर युवाओं को उन्मुख करता डॉ. चंद्रकुमार जैन का आलेख 'जल प्रबंधन में युवाओं की भूमिका' विशेष प्रशंसनीय है। **सुझाव** : आपकी प्रयोगशाला की राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों, रेटिंग और जनसुविधाओं की जानकारी भी सम्मिलित करें। प्रशंसनीय रचनाकारों के उत्साहवर्धन हेतु इस पत्र की प्रति भेंट करें। संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाईयाँ। अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित।

श्री. मनोज कुमार यादव
सहायक निदेशक, प्रभारी राजभाषा अधिकारी
उप–क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला की वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'एन.सी.एल. आलोक' की प्रति (सीडी) प्राप्त हुई। धन्यवाद। प्रौद्योगिकी, राजभाषा एवं साहित्य विषयांतर्गत शामिल सभी लेख/सामग्री/कविताएं काफि रोचक एवं सराहनीय हैं। पेपर रहित पर्यावरण सौम्य में (सीडी) प्रतिष्ठित पत्रिका आलोक का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है, इसके लिए आपको और आपकी पूरी टीम को सीएसआईआर–सीईसीआरआई, कारैकुडी की ओर से बहुत–बहुत बधाई। आगामी अंक हेतु शुभकामनाएं।

सोमेश्वर पाण्डेय
हिंदी अधिकारी
सीएसआईआर–केंद्रीय विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान, कराईकुडी

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'एन.सी.एल. आलोक' आकाशवाणी पुणे केंद्र को प्राप्त हुई, उसके लिए धन्यवाद। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख उच्च कोटि के हैं, सभी लेखकों एवं संपादक मण्डल को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। यह पत्रिका प्रशासकीय कार्यों के साथ अन्य अनुभाग के कार्यों में राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा हेतु उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. साहेबराव सोनवणे
सहायक निदेशक–राजभाषा
कृते उपमहानिदेशक (अभियांत्रिकी) द्वारा आकाशवाणी, पुणे

आपके पत्र सं. 8 हिन्दी (राराप्र) 2001, दिनांकित 14/10/2016 के द्वारा आपकी प्रयोगशाला से प्रकाशित वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'एन.सी.एल. आलोक' 2016 का 20 वां अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। प्रयोगशाला में हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु 'एन.सी.एल आलोक' 2016 का प्रकाशन प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण मजमून निश्चित रूप से अन्य प्रयोगशाला/संस्थानों के लिए प्रेरणात्मक होंगे। आशा है आप अपने संस्थान की राजभाषा विषयक गतिविधियों से निरंतर अवगत कराती रहेंगी।

संजय कुमार राम
हिन्दी अधिकारी एवं अनुभाग अधिकारी, सीएसआईआर–सीमैप, लखनऊ

''स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेना सबसे श्रेष्ठ और महानतम विजय होती है।''

आपकी प्रतिक्रिया

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका आलोक का 20 वां अंक प्राप्त हुआ। इसमें वैज्ञानिक, तकनीकी लेखों के साथ राजभाषा हिन्दी संबंधित लेख, साहित्यिक रचनाओं का सुंदर सामंजस्य किया गया है। इस प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई एवं शुभकामनाएं।

डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय
वैज्ञानिक एवं समन्वयक राजभाषा कार्यान्वयन
केन्द्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर

आपके संस्थान की हिन्दी वार्षिक पत्रिका एनसीएल आलोक 2016 की ई–प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की प्रति भेजने के लिए धन्यवाद।

संस्थान की हिन्दी वार्षिक पत्रिका के अंतर्गत आर एन्ड डी जानकारी के अलावा विभिन्न विषयों से संबंधित लेखों एवं कविताओं का समावेश करने का आपका प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं अत्यंत ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। निस्संदेह कहा जा सकता है कि संस्थान की यह पत्रिका संस्थान के कार्यों को हिन्दी के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाने का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न कर सकेगी।

संजय चौधरी
सदस्य सचिव, रा.का.स. एवं प्रभारी राजभाषा अनुभाग
सीएसआईआर–केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका की सीडी प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद।
आपके संस्थान द्वारा इस तरह सीडी में पत्रिका को उपलब्ध कराना वास्तव में एक अनुकरणीय नई सोच है। इससे न केवल कागज की बचत होती हैं, बल्कि खर्च भी कम आता है और रखने में जगह कम लगती है। आलोक का यह अंक आकर्षक है ही, साथ में उपयोगी सामग्री से युक्त है। इसके अलावा हर एक पृष्ठ के नीचे महापुरूषों तथा राजभाषा से संबंधित उक्तियां देना भी सराहनीय है। पत्रिका के 20 अंक लगातार जारी करना आपने आप में बड़ी उपलब्धि है। नई सोच और कर्मठता के साथ कार्य कर रहे आप सभी हिन्दी कर्मियों को बधाई और सभी लेखकों को भी साधुवाद।
शुभकामनाओं सहित,

श्री आर. चन्द्रशेखर
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
सीएसआईआर–सीसीएमबी, हैदराबाद

❑❑❑

''यदि हम असफलता से शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह सफलता ही है''– मैल्कम फोर्ब्स

स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा 29/04/2017 को एनसीएल के राजभाषा संबंधी निरीक्षण दौरे की झलकियाँ

दि. 19/1/2017 को आयोजित एक दिवसीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी की झलकियाँ

सीएसआईआर – राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

डॉ. होमी भाभा मार्ग, पाषाण, पुणे 411008

CSIR - National Chemical Laboratory

Dr. Homi Bhabha Road, Pashan, Pune 411008